52nd Year in the Service of Mankind

Bharat Vikas Parishad

May, 2016 No. 05 Vol XXXXXIV

सृष्टि संवत् : 1,96,08,53,119 शकसंवत् 1938

वैशाख-ज्येष्ठ 2073 दयानन्दाब्द 193 कलि संवत् 5118

Mouth piece of Bharat Vikas Parishad with a circulation of 54000

National President
SITARAM PAREEK
MOB.: 0-9322265975 (MUMBAI)

National Vice President (HQ) & Editor
DR. SURESH CHANDRA GUPTA
MOB : 09415334709 (FARRUKHABAD)

National Secretary General
AJAY DUTTA
MOB. : 09417016915 (CHANDIGARH)

National Finance Secretary
OM PRAKASH KANOONGO
MOB. : 09322295253 (MUMBAI)

National Organising Secretary
SACHIDANAND PANDA
MOB. : 09437506798 (BHUBANESWAR)

Chairman Prakashan
ATAM DEV
RESI : 011-27315696 (DELHI)

विशेष : शाखा समाचारों की प्रक्रिया में एक बड़ा परिवर्तन।

प्रकल्प के अन्तर्गत महत्वपूर्ण, समाज के लिए प्रभावी, समाज परिवर्तन में सक्षम ऐसे समाचारों का प्रकाशन किया जायेगा। अभिनन्दनीय, दुर्लभ, प्रेरक घटनाओं को भी सम्माहित किया जाएगा। शाखा की बैठक, परिवार मिलन, वन विहार आदि सदस्यों के लिए प्रेरक है परन्तु प्रकाशन के लिए न भेजें। मासिक/वार्षिक ब्यौरा 'नीति' का विषय नहीं है। परिषद् के अलावां भी कोई प्रेरक संस्करण या घटना भेज सकते हैं। **सम्पादक**

Niti e-paper : This issue is also available on Parishad's website www.bvpindia.com

Published & Printed by S.K.Wadhwa for BHARAT VIKAS PARISHAD, Bharat Vikas Bhawan, Plot No. MS-14 AD/BD Block, (Adjoining BD-87), Pitampura, Delhi-110034 Editor : S.K.Wadhwa Printed at: BHAWNA PRINTERS, A-26, Naraina Industrial Area, Phase-II, Delhi-110028 Ph.: 9871577322

जब हम दिन की शुरूआत करते हैं, तब लगता है कि, पैसा ही जीवन है। लेकिन शाम को लौटकर घर आते हैं, तब लगता है, शान्ति ही जीवन है।

CONTENTS

1. सम्पादकीय 4
2. संगठन के झरोखे से/प्रौढ़ साधना शिविर 5
3. BVP National Project Committeis-2016-17 6
4. Calendar Activities-2016-17 10
5. वैचारिकता: समग्र विकास 12
6. भारत विकास भवन के द्वितीय व तृतीय तल का लोकार्पण 14
7. स्वास्थ्य 15
8. प्रौढ़ साधना शिविर : मा. कैलाश जी का उद्बोधन 18
9. जीवन का उद्देशय -जितेन्द्र वीर गुप्त 19
10. विविध गतिविधियाँ 20
11. व्यावहार कुशल/सच्ची सोच 26
12. शान्ति की ओर 29
13. मानव धर्म 33
14. श्रद्धांजलि 34

विशेष :
1. जीवन का लक्ष्य पृष्ठ संख्या-9, पी.के. जैन।
2. स्वातंत्र्यवीर सावरकर, जन्म दिन पर विशेष, पृष्ठ संख्या-25
3. चैतन्य जगत एवं मौसम, पृष्ठ संख्या-28 इं. बी.डी.शर्मा
3. The Marriage Tournament, Page 31 Nirmal Joshi

मई मास के पर्व एवं राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रम

01 : श्रमिक दिवस,
08 : गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती, भगवान परशुराम जयन्ती
21 : बुद्ध पूर्णिमा
28 : वीर सावरकर जयन्ती

Central & Regd. Office:
BHARAT VIKAS BHAWAN
Behind Power House,
Pitam Pura, Delhi -110034
Ph: 011- 27313051, 27316049 Fax: 011-27314515
e-mail : niti@bvpindia.com, bvp@bvpindia.com
website : www.bvpindia.com

Price : Rs. 10.00 Per Copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

सम्पादकीय...

देश का राष्ट्रीय परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। कुछ समय पूर्व तक आजादी की माँग, अभिव्यक्ति की आजादी पर भावात्मक जुबानी पैतरेवाजी धीरे-धीरे शान्त हो गई है। मीडिया भी आखिर कब तक वही घिसी पिटी कहानियाँ दिखाकर कन्हैया के भाषणों पर परिचर्चा करके, कब तक टी.आर.पी. बटोरता। जे.एन.यू. से शुरू हुई क्रान्ति की मशाल का रंग भी धीमा पड़ गया। मीडिया के कुछ चैनलों को जब अपनी प्रासंगिकता और विश्वसनीयता खतरे में दिखाई पड़ी तो धीरे से ही क्यों न हो पाला बदलने की कवायद शुरू हो गई। ओवैसी के बयान पर जाबेद अख्तर ने वो छक्का जड़ा कि आखिर में ओबैसी जय हिन्द बोल ही गये। जिस देश में सत्ता पक्ष पर इतने गंभीर आरोप लग रहे हो, विरोधियों के द्वारा सरकार की उपलब्धियों पर गंभीर टिप्पणियाँ हो रही हो, मीडिया और वामपंथ सत्ता के विरोध में पूरी ताकत झोक रहा हो, वहाँ सरकार अविचल विश्वास, पूरे संकल्प के साथ देश की विकासशील योजनाओं को आगे बढ़ाने में लगी है। यही आत्म विश्वास है मोदी सरकार का।

क्रान्तिकारी भगत सिंह के बारे में दुराग्रहपूर्ण टिप्पणी हो या वीर सावरकर के प्रति अपमान जनक टिप्पणी का मामला हो। देश के बुद्धिजीवी एवं राष्ट्रवादी विचारकों ने मुहतोड़ जबाव देकर स्वनाम, वैचारिक दरिद्रों को हाशिये पर पहुँचा दिया। देश के कुछ राज्यों में चुनावों का डंका बज गया है। सीमावर्ती राज्य असम, संवेदनशील राज्य है जो अनेक वर्षों से बांग्लादेशी घुसपैठ से उत्पन्न जनाकिकीय असंतुलन का परिणाम भुगत ही रहा है। हिंसक आन्दोलनों के कारण राज्य का विकास अवरूद्ध हो गया। समस्याओं से जूझता पूर्वोत्तर क्षेत्र चीन की गीदड़ भभकी नक्सलवाद, बोडो आन्दोलन और ईशाई मिशनरियों की कुटिल चालों से जूझती सरकार सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक कूटनीति पर सफलता से आगे बढ़ रही है।

जनता देख रही है, समझ रही है। भारत को बाह्य कुचक्रों में फंसाकर पथ भ्रमित किये जाने के प्रयास चरम पर है। परिषद् के सदस्य के रूप में ऐसी राष्ट्रद्रोही घटनाओं पर सटीक प्रतिक्रिया अपेक्षित है। देश की सम्पूर्ण राष्ट्रवादी सोच को एकरूप संगठित सामर्थ्य प्रदर्शित करने का यह अनुकूल अवसर है। जे.एन.यू. के प्रकरण पर आई त्वरित प्रतिक्रिया इसका उदाहरण है। यह विचारधाराओं का संघर्ष भी है। प्रतिस्पर्धा और समन्वय का संघर्ष भी है। इतिहास में आये अनुकूलता के अवसर को अपने राष्ट्रहित की सम्भावनाओं में परिवर्तित कर लें। यही अपेक्षा है। - **सम्पादक**

शुभकामना नव वर्ष 2073

भारतीय नव वर्ष 2073 के आयोजन देश भर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेवा कार्यों, नागरिक अभिनन्दन तिलक एवं पत्रक बांट कर, नगर में झण्डे लगाकर सम्पन्न किये गये। शाखाओं के अनगिनत समाचार इस बारे में मिल रहे हैं। शाखा अजमेर, भवानी मण्डी, सीतापुर, वीर तात्याटोपे, शिवपुरी, कपरेन, बारां, बाड़मेर, मण्डी डबवाली, जोधपुर, फतेहाबाद, मेवाड़ जयपुर, सुभाष कोटा, नागौर, छीपाबडौद आदि शाखाओं ने कही 1008 दीपों का प्रज्ज्वलन, मिश्री नीम का प्रसाद, हवन यज्ञ, स्वागत यात्रा, सुन्दरकांड पाठ, आरती, महाआरती, करके पूरे देश में नव वर्ष को एक प्रभावी स्वरूप देने की कोशिश की। कुछ शाखाओं ने वार्षिक चुनाव के समाचारों के कारण नव वर्ष समारोह की ख़बरे प्रेषित नहीं की। देश के दो प्रमुख स्थानों पर परिषद् के द्वारा नव वर्ष मेला और नव वर्ष यात्रा का बड़ा आयोजन होता है। जिला गाज़ियाबाद (उ०प्र०) की साहिबाबाद शाखा तीन दिन लगातार मेले का आयोजन करती है। मैले में 80-100 दुकाने, प्रतिदिन 3 घण्टे सांस्कृतिक कार्यक्रम, लक्की ड्रॉ, 25-35 तक स्कूली छात्राओं की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ करते हुए लगभग 10000 लोग प्रतिदिन मेले में भाग लेते हैं। शाखा के सभी सदस्य लगातार कार्यक्रम में व्यवस्था देखते है। 15 वर्ष से अधिक हो गये मेला लगातार चलता है। महाराष्ट्र के डोम्बिवली शाखा में परिषद् सदस्यों के सहयोग से श्री गणेश मंदिर से शोभा यात्रा निकाली जाती है। नगर के लोगों को शुभकामना तिलक के साथ अनेक संस्थाएँ यात्रा में भाग लेती है। संयोजक श्री शरद जी मडिवोल के अनुसार 18 साल से निरन्तर चलने वाली यात्रा में 10000 लोग शामिल होते है। श्री गणेश मंदिर गरीब बच्चों के लिए कम्प्यूटर केन्द्र, पुस्तकालय, आर्थिक सहायता प्रकल्प परिषद् के सहयोग से संचालिक करती है।

बोध

एक गरीब आदमी ने भगवान महावीर से पूछा मैं इतना गरीब क्यो हूँ? तुम गरीब इसलिए हो क्योंकि तुमने देना नहीं सीखा। परन्तु मेरे पास तो देने के लिए कुछ भी नहीं है। भगवान महावीर ने कहा तुम्हारा चेहरा एक मुस्कान दे सकता है। तुम्हारा मुँह किसी की तारीफ कर सकता है। किसी को सकून पहुँचाने के लिए तुम दो मीठे बोल बोल सकते हो। तुम्हारे हाथ से किसी की सहायता कर सकते हो और तुम कहते हो तुम्हारे पास देने को कुछ नहीं है। जो देना जानता है पाने का हक उसी को है। - **जय जिनेन्द्र**

संगठन के झरोखे से

वर्ष 2016-17 में हुए व्यापक परिवर्तनों की जानकारी क्षेत्रीय कार्यशालाओं के द्वारा आपको प्राप्त हुई होगी। शाखाओं के कुछ कार्यक्रम अपने सदस्यों की सक्रियता के लिए आयोजित किये जाते हैं वहीं कुछ सार्वजनिक महत्व के कार्यक्रमों के द्वारा नगर के विशिष्ट पहचान वालें लोगों को परिषद् का परिचय कराने के लिए आयोजित होते हैं डाक्टरों के लिए चिकित्सा जांच, रक्तदान, नेत्रदान शिविर तथा महिला चिकित्सकों के लिए छात्राओं की काउन्सिलिंग एवं चिकित्सकीय सुझावों की आवश्यकता भी महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण शैक्षिणिक संस्थानों के फैकल्टी के द्वारा समाजिक एवं सामयिक विषयों की परिचर्चा एक महत्वपूर्ण प्रयोग हो सकता है। प्रसिद्धि, सम्मान एवं अहम् की पूर्ति के कारण कहीं कहीं परिषद् को एक सीमित दायरे रखने की वृत्ति का आभास मिलता है। इसके कारण पूरे समाज में परिषद् की सुगंध फैलाने में बाधा पड़ती है। अधिकारों का बलय हम कुछ लोगों के बीच ही रहे यह सोच कार्य विस्तार में बाधक है। मेरी सहमति के बिना दायित्व न दिये जाए, मेरी सहमति के बिना कार्यक्रम तय न किये जाए अथवा मेरी स्वीकृति के बिना अतिथि निश्चित न हो, यह भाव सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त पर गहरा कुठाराघात है। सुझाव देना अपना दायित्व है, निर्णय करना अपना विषय नहीं है। कहीं-कहीं जब अमर्यादित व्यवहार, असन्तोष अथवा विचारों में भेद के समाचार मिलते है तो इसका एक मात्र कारण किसी अथवां कुछ लोगों का अहम् ही होता है। अच्छे संकल्प से अच्छे मन से, शुद्ध विचारों से किये गये कार्य ही सफल होते हैं यह स्मरण रखना आवश्यक है।

-scguptafbd141@gmail.com

प्रौढ़ साधना शिविर

चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) - 19-20 मार्च, 2016 : देश भर से प्रौढ़ सदस्य परिवारों का प्रौढ़ साधना संगम गुलशन गार्डन चित्तौड़गढ़ के प्रेक्षाग्रह में 400 सदस्य परिवारों के साथ सम्पन्न हुआ। श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल, विधान सभा अध्यक्ष, राजस्थान ने उद्घाटन करते हुए देश की पहचान, अस्मिता और संविधान में घोषित मान्यताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि 68 वर्षों में भारत के सभी धर्मों, पंथों और जातियों के लोगों को आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक न्याय की गारन्टी देने में सफल नहीं हुए। इतने वर्षों में देश की आज़ादी में सिद्धान्तों की राजनीति तिरोहित हो गई। जातिवाद की राजनीति, भष्टाचार, नैतिक चरित्र का अभाव के कारण देश की दिशा बदल गई। देश की वर्तमान को बदलने के लिए प्रौढ़ वर्ग का एक महती भूमिका निभानी होगी। इस अवसर पर सी.पी. जोशी, सांसद, श्री चन्द्रभान सिंह, विधायक तथा गणमान्य लोग उपस्थित रहे। मुम्बई से पधारे विद्वान, कथाकार श्री वीरेन्द्र याज्ञनिक ने स्वामी विवेकानन्द के अनछुए पहलुओं का उल्लेख करते हुए उनके अल्मोड़ा प्रवास की घटनाओ का जिक्र करते हुए बताया कि स्वामी जी की 150वीं जयन्ती वर्ष में जब वे शिकागो के उस सभागार को देखने गये जो वर्तमान में विवेकानन्द के अभिलेखागार के रूप में सुरक्षित है। उनके मित्र ने संग्राहलय अधिकारी से उस स्थान को देखने की अनुमति माँगी। संग्राहलय के वह अधिकारी मेरे चरण स्पर्श कर उस स्थान पर ले जाता है। यह था स्वामी जी का प्रताप जिसके कारण स्वामी जी के साधारण शिष्यों को भी वही सम्मान प्राप्त है।

साध्वी शमणी प्रज्ञा जी ने अगले सत्र में अणुवृत्त आचार्य तुलसी का जिक्र करते हुए 12 नियमों के बारे में बताया जिससे मनुष्य निर्माण का लक्ष्य पूरा होगा। आत्मा के गुण सीखो, काम, क्रोध, माया लोभ समाप्त कर वर्तमान में जीना सीखो। Live is present का भाव रखकर किसी से बुरा व्यवहार न करो। भावक क्रिया का उल्लेख करते हुए साध्वी ने कहा कि जानकर करो अनजान बन कर मत करो। बोलने से पहले सोचो। क्या यह सत्य है? क्या यह सहयोग पूर्ण है? क्या यह उत्साहवर्धक है? क्या यह आवश्यक है? क्या यह ज्ञानवर्धक है?

शिविर के समस्त प्रतिभागी क्रमशः परिषद् के सदस्य, पदाधिकारी और महिला समूहों में खुली चर्चा के लिए अलग-अलग विमर्श के लिए एकत्र हुए। सत्रों का सार श्री सुरेन्द्र कुमार वधवा, ऋषभ खुराना, जयराज आचार्य ने प्रस्तुत किये। विद्यार्थियों को परामर्श, युवा दम्पतियों को समाधान, कारक व्यवस्था, स्वच्छता, गरीबो की सेवा, एकल और संयुक्त परिवारों का महत्व, संस्कार केन्द्र, विकलांग सहायता के साथ कई महिला प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव साझा किये।

सायंकालीन सत्र में दिल्ली के कुटुम्ब प्रबोधन प्रमुख भगवानदास जी ने परिवारों में संस्कार व्यवस्था के लिए आधुनिक जीवन शैली के आधार पर करणीय व्यवहार का उल्लेख किया। रात्रि में मो. जब्बार पूर्व अध्यक्ष भारत विकास परिषद्, अब्दुल सत्तार तथा ख्यातानामा कवियों की उपस्थिति में रोचक काव्य संध्या के पूर्व सदस्य परिवारों द्वारा नृत्य, स्वागतगीत, होली गीत प्रस्तुत किये गये।

दूसरे दिन माननीय कैलाश जी क्षेत्रीय बौद्धिक प्रमुख, पी.के.जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का उद्बोधन हुआ। यह इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित किया जा रहा है। समापन सत्र में पुलिस अधीक्षक तथा विधायक श्री कृपाल जी सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे। श्री कमल जैन, प्रान्तीय महासचिव के निर्देशन में श्री अनिल ईनाणी, अध्यक्ष की टीम ने व्यवस्थाओं को भलीभाँति निर्वहन किया। विभिन्न समितियों के प्रभारी श्री ऋषभ सुराना, दौलत ढ़ासानी, डॉ. चेतन खिमसेरा, आई.एस.सेठिया, डॉ. महेश सनाढ़य, रमेश ईनाणी, बालकृष्ण धूत, कैलाश न्याती, कृष्ण गोपाल पुर्गालिया, दिनेश कुमार खत्री, अम्बालाल काबरा के साथ सदस्यों ने सभी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से सम्पन्न किया। दोपहर भोज के बाद सभी प्रतिनिधियों को चित्तौड़गढ़ किले सहित सभी पर्यटन स्थलों का भ्रमण कराया गया।

BHARAT VIKAS PARISHAD
National "Committee SEWA" for the period 2016-18

(Sewa Project-Viklang Shayata, Viklang Punerwas, Vanvasi, Health, Blood Donation, Enviroments, Mass Marriages, Mukti Dham, Gau Sewa, Relief Work & Permanent Project)

1.	National Chairman-Sewa	Shri Yash Paul Gupta	Ludhiana
2.	National Secretary	Shri Nidhish Gupta	Delhi/Noida
3.	Regional-Secretary Project (North)	Dr. Rajesh Puri	Moga
4.	Regional-Secretary Project (North)	Dr. Vasudev Bansal	Narwana
5.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Surinder Lahoria	Hissar
6.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Madan Malik	Delhi
7.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Anil Goyal	Jodhpur
8.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. Shiv Dayal Mangal	Bari-Dholpur
9.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Yudhishter Trivedi	Banswara
10.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Rajendra Prasad Kothari	Bhilwara
11.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. Madan Gopal Varshney	Udaipur
12.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Arvind Garg	Bilaspur
13.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Pawan Kumar Aggarwal	Kishangarh
14.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Pramod Dadu	Kanpur
15.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Dr. Nitin Dalabh	Sambhal (U.P.)
16.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Anurag Dublish	Mawana-Meerut
17.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Bhagwan Sahai Aggarwal	Haldwani
18.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Sanjeev Jain	Ferozabad
19.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Shashi Bhushan Gupta	Kannouj
20.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Ajay Kumar Bishnoi	Moradabad
21.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Umesh Rati	Nasik
22.	Regional-Secretary Project (West)	Shri K.K.Aggarwal	Mumbai
23.	Regional-Secretary Project (West)	Shri S.S.Gupta	Mumbai
24.	Regional-Secretary Project (South)	Shri D.P.Swamy	Maddur,Karnataka
25.	Regional-Secretary Project (East)	Prof. (Smt.) Bina Bora	Dibrugarh
26.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Nandlal Singhania	Kolkata
27.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Kapoor Chand Jain	Guwahati
28.	Regional-Secretary Project (East)	Dr. TRaj Ranjan Prasad	Darbhanga
29.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Jagdish Prasad Mishra	Bhubaneswar

National "Committee Sanskar" for the period 2016-18

(Sanskar Project-Yuva Sanskar, Praudh Sadhna, Workshop, Sanskriti Saptah, GTT & Other inspiring Project)

1.	National Chairman-Sanskar	Shri Jeevan Ram Gupta	Orai
2.	National Secretary	Shri Ajay Bansal	Gwalior

3.	Regional-Secretary Project (North)	Dr. (Smt.) Santosh Gupta	Jammu
4.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Joginder Madan	Karnal
5.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Sewa singh Chawla	Faridkot
6.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Ramesh Chander Goyal	Sirsa/Delhi
7.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Raman Chaddha	Dewas
8.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. K.S. Mangal	Gwalior
9.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Balraj Acharya	Bhilwara
10.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. B.L.Kumawar	Udaipur
11.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Mukan Singh Rathore	Bhilwara
12.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Rajeev Agarwal	Agra
13.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Shiv Nandan Gupta	Allahabad
14.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Brijendra Singh Verma	Agra
15.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Dr. Divya Lahri	Aligarh
16.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Naveen Kumar	Khurja
17.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Rajender Jog	Pune
18.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Himmatsingh N. Rathod	Ahmedabad
19.	Regional-Secretary Project (South)	Dr. B.D.Patel	Bangalore
20.	Regional-Secretary Project (South)	Shri P.V.Athikayan	Kochi
21.	Regional-Secretary Project (East)	Dr. Umesh Kumar Verma	Gaya
22.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Debal Kanti Sarkar	Guwahati
23.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Ghanshyam Sugla	Kolkata
24.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Pramod Kumar Ambastha	Ranchi

National "Committee BKJ & GVCA" for the period 2016-18

1.	National Chairman-BKJ & GVCA	Shri Neeraj Gupta	Mumbai
2.	National Secretary	Dr. Tarun Sharma	Agra
3.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Rakesh Sachdeva	Moga
4.	Regional-Secretary Project (North)	Shri C. P. Ahuja	Fatehabad
5.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Ghanshyam Sharma	Suratgarh
6.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Santosh Gupta	Gangapur City
7.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Bharat Bhushan Juneja	Kanpur
8.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Dr. Harish Chandra Gupta	Raebareli
9.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Jagdish R.Rana	Ahmedabad
10.	Regional-Secretary Project (South)	Shri K.N.Ramaraj Urs	Bangalore
11.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Udai Chand Gupta	Nalanda

National "Committee for NGSC" for the period 2016-18

1.	National Chairman-NGSC	Dr. Shubh Karan Jain	Mumbai

2.	National Secretary	Dr. Tribhuwan Sharma	Bikaner
3.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Sushil Sharma	Pathankot
4.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Pradeep Aggarwal	Ujjain
5.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Kawal Sahni	Kanpur
6.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Vinodbhai H. Shah	Ahmedabad
7.	Regional-Secretary Project (South)	Shri V. R. Kannan	Chennai
8.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Pramod Bhagat	Sahrsa

National "Committee Gram Vikas" for the period 2016-18

1.	National Chairman-Gram Vikas	Shri Ashok Jadhav	Dewas
2.	National Secretary	Shri Rakesh Kumar Gupta	Bhiwadi
3.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Radhe Sham Mahajan	Dinanagar
4.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. Bhanwar Lal Hirawat	Udaipur
5.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Ramesh Lalwani	Varanasi
6.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Bharatbhai Chimanlal Thakkar	Harij
7.	Regional-Secretary Project (South)	Shri Chella Subrahmaniam	Chennai
8.	Regional-Secretary Project (East)	Dr. S.N. Patel	Motihari

National "Committee for Mahila & Bal Vikas" for the period 2016-18

1.	National Chairperson	Smt. Savitri Varshney	Aligarh
2.	National Secretary	Smt. Avinash Sharma	Jind
3.	Regional-Secretary Project (North)	Smt. Archana Singhal	Delhi
4.	Regional-Secretary Project (Central)	Dr. (Smt.) Santosh Godha	Udaipur
5.	Regional-Secretary Project (Central)	Smt. Jyoti Jain	Indore
6.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Smt. Usha Asthana	Lucknow
7.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Smt. Beena Aggarwal	Meerut
8.	Regional-Secretary Project (West)	Smt. Sujata Khatavkar	Pune
9.	Regional-Secretary Project (South)	Smt. Pilla Nirmala	Anakapalli
10.	Regional-Secretary Project (East)	Dr. (Smt.) Reeta Bhattacharya	Kolkata

National "Committee Sampark" for the period 2016-18

1.	National Chairman	Shri Atam Dev	Delhi
2.	National Secretary	Shri Mithilesh Kumar Verma	Motihari
3.	National Secretary	Shri Mahesh Sharma	Delhi
4.	Regional-Secretary Project (North)	Dr. Vipin Dhingra	Phagwara
5.	Regional-Secretary Project (North)	Shri Praveen Singhal	Ganaur
6.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Ashok Vashishth	Kota
7.	Regional-Secretary Project (Central)	Shri Hari Prasad Sharma	Swaimadhopur

8.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Dr. Sanjeev Jain 'Kadanki'	Lalitpur
9.	Regional-Secretary Project (North-Central)	Shri Hari Narain Chaturvedi	Agra
10.	Regional-Secretary Project (West)	Shri Sudhir Joglekar	Thane
11.	Regional-Secretary Project (South)	Shri Ch. Rajeshwar Rao	Hyderabad
12.	Regional-Secretary Project (South)	Shri Kasi V. Rao	Hyderabad
13.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Dhanush Dhari Mishra	Bhubaneswar
14.	Regional-Secretary Project (East)	Shri Kundan Kumar Sinha	Dhanbad

"Committee for CENTRAL OFFICE"

1.	National Vice President - Head Office & Editor NITI	Dr. Suresh Chandra Gupta	Farrukhabad
2.	National Addl. Secretary General-Head Office	Shri Chander Sain Jain	Rohtak
3.	National Addl. Secy. General - Finance & Accounts	Shri Sanjeev Kumar Bansal	Moradabad
4.	National Secretary Legal	Shri B. L. Gaggar	Mumbai
5.	Editor Gyan Prabha	Dr. Champa Srivastava	Raebareli
6.	Regional Secretary Project-Legal Matters	Shri Satish Chander	Meerut

Note : **National President, National Secretary General & National Finance Secretary will be the ex-officio member of all committies.**

- National Secretary General

जीवन का लक्ष्य (प्रौढ़ साधना शिविर)

हम जो कार्यक्रम करते हैं ये हमारा उद्देश्य नहीं है। बल्कि संगठनशीलता, संवेदनशीलता का विस्तार यह परिषद् का मूल उद्देश्य है। इन उद्देश्यों को लेकर ही सारे कार्यक्रमों की रचना की गई है। अत: कार्यक्रमों से यह उद्देश्य पूरा होता है या नहीं। हम अपने कार्यकर्ताओं में यह संवेदनशीलता पैदा करना चाहते हैं। जब कार्य पूर्ण हो जाता है। तब हमें बड़ा आनन्द आता है। इस आनन्द को ही हम सार्थकता कहते हैं। कभी-कभी अपेक्षाओं में भी परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन से निराशा भी मिलती है। अपेक्षाओं का व्याप जितना छोटा होगा सार्थकता उतनी छोटी होती है। जब उपेक्षाओं का व्याप बड़ा होता है, तब सार्थकता भी बड़ी होती है और इसका आनन्द सभी कार्यकर्ताओं को मिलता है। इसलिए अपेक्षाओं का चयन करते समय हमें कार्य, परिस्थिति और सार्थकता के व्याप का ध्यान रखना चाहिए। अपने परिवार और समाज की जिम्मेदारी पूर्ण हो जाने के बाद हमें लगता है कार्य समाप्त हो गया। परन्तु वास्तव में समाज को दिशा देने का काम वान प्रस्थ में करना है। मनु के अनुसार संन्यास चार प्रकार का बताया गया है। कुटीचर संन्यास जिसमें मनुष्य परिवार में रहकर भी परिवार से निरपेक्ष होकर काम करना अर्थात् परिवार में लिप्त न होना और परिवार में न उलझते हुए समाज का काम करे। आप सभी प्रौढ़ बन्धु इसी श्रेणी में आते हैं। कभी-कभी कम आयु में भी लोग सेवा कार्य करते हैं। परन्तु उन्हें अनुभव नहीं होता। इसलिए उनकी सेवा का व्याप छोटा होता है। आप लोगों ने जीवन की समस्याओं का अनुभव किया है। आज के युग में सुख को लोग भौतिक संसाधनों से तुलना करते है। परन्तु हम जानते है कि संसाधनों में सुख नहीं है। पश्चिमी देशों में बहुत संसाधन होने पर भी लोग सुखी नहीं है। फिर आखिर सुख क्या है। वस्तुओं में सुख नहीं है। क्योंकि एक सीमा के बाद उस वस्तु की उपयोगिता समाप्त हो जाती है। एक परिवार में एक महिला सुबह से घर के सब काम करती है और सब काम से निव्रत होकर बैठती है। अब उसकी कोई अपेक्षा नहीं है। वह आनन्द का अनुभव करती है। यही आत्मिक सुख जीवन का लक्ष्य है। हम परिवार, समाज को छोड़कर संन्यास लेकर तपस्या नहीं कर सकते। अत: भारत विकास परिषद् ने हमें जीवन का लक्ष्य दिया। सर्वे भवन्तु सुखिनां सभी को सुखी और निरोगी बनाने की संवेदनशीलता का लक्ष्य रखा। हमारे प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी ने कन्या कुमारी की शिला पर बैठकर माँ भगवती के दर्शन किये और भारत माता को जगतमाता मानकर इस देश के पुत्रों की सेवा करना, ये ही हमारा लक्ष्य है। इस देश के गरीब, दुखी, पीड़ित अशिक्षित लोगों की सेवा करना, उनको नारायण मानना, यही हमारे जीवन का लक्ष्य है। इस लक्ष्य से काम करें तो आनन्द की प्राप्ति होगी। - **पी.के. जैन**, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

CALENDAR OF ACTIVITIES: 2016-17

Central/Regional	Prants	Branches
April-2016 1. Apex Body Meeting 2. Chintan Baithak 3. Core Group Meeting 4. Regional Workshop 5. Finalizing of Calendar of activities for the whole year 6. Planning of Pravas of National Elected Office Bearers for first quarter	**April-2016** 1. Prantiya Adhivation / Prantiya Workshops 2. Approval of audited accounts of 2015-16 & Presentation of Budget 3. Finalizing of Calendar of activities for the Year 2016-17 4. Remitting of Central Share 5. Planning of Pravas of Elected Office Bearers for first quarter	**April-2016** 1. Annual General Body Meeting 2. Approval of audited accounts of 2015-16 & Presentation of Budget 3. Membership Drive 4. Finalizing of Calendar of activities for the whole year & planning of new projects 5. Remitting of Central & Prant Share 6. Meeting of Branch Executives & Approval of Calendars 7. Celebrations of Festival
May 1. Regional Workshops 2. Core Group Meeting	**May** 1. Prantiya Worskhops 2. Branch expansion drive 3. Planning & Review of permanent Projects & submission of complete detail to Centre	**May** 1. Membership drive 2. Bal Sanskar Shivir 3. Remitting of Prant & Central Share 4. Discussion on Branch visit during earlier month by elected office bearers 5. Planning of GVCA programme 6. Celebrations of Monthly Festivals
June 1. Core Group Meeting 2. National Level Trust & properties Meeting 3. Project Committee Meeting	**June** 1. Submission of branch wise membership list with full address 2. Verification Niti of dispatch list by any elected Prantiya Office Bearer 3. Branch expansion drive	**June** 1. Membership drive 2. Bal Sanskar Shivir 3. Remitting of Prant & Central Share 4. Organization of Youth events/ Yuva Shivirs 5. Celebrations of Monthly Festivals
July 1. Core Group Meeting 2. Pravas Reporting for earlier quarter & planning of pravas for the next quarter 3. Financial statement of previous year 4. Meeting of BKJ Committee 5. Meeting NGSC Committee	**July** 1. Foundation Day Celebration 2. State level Youth events 3. Meeting Prantiya Sanskar Pramukh with Branch Office Bearers 4. Pravas Reporting for earlier quarter & planning of pravas for the next quarter	**July** 1. Foundation Day Celebration (10th July) 2. Tree Plantation 3. Yuva Shivirs/Youth Events/ Seminars 4. Planning of Sahal (get together) of members' Families 5. NGSC Branch level 6. Celebrations of Monthly Festivals
August 1. Core Group Meeting 2. Approval of financial accounts & review of Budget for the year 3. National Office Bearers Meeting /Apex Body Meeting 4. Presentation & Approval of Audited Accounts-2015-16	**August** 1. State executive/ state council meet 2. Branch Expansion Drive	

Central/Regional	Prants	Branches
September 1. Core Group Meeting	**September** 1. Prant level Mahila Karya Karta Workshop 2. NGSC Prant level	**August** 1. Independence Day Celebrations 2. Tree Plantation 3. NGSC Branch Level 4. Bharat Ko Jano written Competition Branch Level 5. Celebrations of Monthly Festivals
October 1. Core Group Meeting 2. Pravas Reporting for earlier quarter & planning of pravas for the next quarter 3. Regional Coordination Committee Meetings	**October** 1. NGSC Prant level 2. Pravas Reporting for earlier quarter & planning of pravas for the next quarter	**September** 1. Sanskriti Saptah 2. NGSC Branch Level 3. Guru Vandan Chhatra Abhinandan 4. BKJ Competition Branch Level 5. Celebrations of Monthly Festivals
November 1. Core Group Meeting 2. NGSC All India level	**November** 1. BKJ Prant level 2. Guru Teg Bahadur Balidan Diwas	**October** 1. BKJ Branch level Prashan Manch 2. Gandhi Jayanti / Swachhata Diwas on 2nd October 3. Celebrations of Monthly Festivals
		November 1. GTB Balidan Diwas 2. Celebrations of Monthly Festivals
December 1. Core Group Meeting 2. National Conferences 3. Planning of Pravas of next quarter	**December** 1. Prantiya Executive Meeting to take progress & further planning as per RCC Meeting 2. Planning of Pravas of next quarter	**December** 1. Branch executive meeting to takeoff progress & planning for PEC meeting 2. Celebrations of Monthly Festivals
January, 2017 1. Core Group Meeting 2. Reporting on pravas previous quarter 3. BKJ All India level competition 4. National level Mahila Karya Karta Workshop 5. Review of Nine month progress	**January, 2017** 1. Prant level elections 2. Celebration of Swami Vivekananda Jayanti.	**January, 2017** 1. Swami Vivekananda birthday celebrations 2. Republic day celebrations 3. Celebrations of Monthly Festivals
February 1. Core Group Meeting 2. Apex Body Meeting 3. National Governing Board Meeting 4. Praud Sadhana Shivir all India level	**February** 1. Prant level elections	**February** 1. Annual elections of branches 2. Celebrations of Monthly Festivals

Central/Regional	Prants	Branches
March 1. Core Group Meeting 2. Formation of National Executive for 2017-18 3. Reporting of pravas of previous quarter	**March** 1. State council meeting 2. Planning of Workshop for Office Bearers 3. Reporting of pravas of previous quater	**March** 1. Annual elections of branches 2. Planning of workshop for office bearer 3. Reporting of pravas of previous qua 4. Celebrations of Monthly Festivals

Notes :

1. Viklang Camps / Health, Eye Care Camps *and awareness camps* should be held throughout the year, whenever convenient.
2. Each branch should adopt at least one village/slum or basti.
3. Each branch must have at least one permanent project.
4. To ensure remittance of Central/Prant share by 30th June as first instalment and full & final payment by 30th September, 2016 positively.
5. To contact electronic media/print media and dignitaries in the area to give wide publicity and larger participation of the elite of the society in the Parishad's Programmes.
6. Branch should take initiative to constitute help lines for needy senior citizen, women & children.

- **Ajay Dutta**, National Secretary General

परिषद् वैचारिकता : समग्र विकास

भारत विकास परिषद् की वैचारिकता प्रतिबद्धता सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर देश का समग्र विकास हो एक ध्येयनिष्ठ सुदृढ़ आयाम है। जिसको सर्वकालिक एवं सार्वजनिक रखना अनिवार्य है। स्वस्थ, समर्थ एवं संस्कारित भारत की अवधारणा सर्वव्यापी हो इस निमित्त परिषद् पूर्ण मनोयोग से सम्पूर्ण गतिविधियों को विभिन्न प्रकल्पों से निष्पादित कर रही है। जो निरन्तर होते रहना अपेक्षित है। संसाधनों से वंचित समाज में अदम्य जिजीवषा है इसलिए संघर्षरत है, ऐसे में जीवन स्तर का उन्नयन समय की मांग है। समाज को सही दिशा एवं दृष्टि देने हेतु सामूहिक सरल विवाह एवं समग्र ग्राम विकास योजना ऐसे प्रकल्प है जो हमारी पुरातन तथा शाश्वत परम्पराओं को अक्षुण्ण रखते हुए सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन शैली को सुव्यवस्थित करने में सहायक है। अति भौतिकवाद की चकाचौंध तथा बदलते जीवन मूल्यों ने आम जनो को प्रभावित किया है। ऐसे में परिषद् अपनी गतिविधियों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनरूत्थान के निमित्त मील का पत्थर सिद्ध हो रही है। आरोपित जीवनशैली में दोहरी जिन्दगी जीने वाली पीढ़ी को अस्तित्व बोध करवाना एक क्रान्तिाकरी पहल होगी, इस निमित युवा और किशोर संस्कार शिविरों का समयबद्ध आयोजन हो। कारण कि युवा वर्ग में बढ़ती मानसिक समस्याएँ गम्भीर एवं चिन्ताजनक है। किशोर एवं किशोरियों के लिए स्वास्थ्य एवं जीवनचर्या को संतुलित रखना, सामाजिक परिवेश में स्वयं को समायोजित करना तथा प्रतिस्पर्धा के दौर में निरपेक्ष रहना सबसे बड़ी चुनौती है।

शहरी और ग्रामीण सभ्यता का सुमेलित तारतम्य बनाना तथा प्रतिभावों को प्रोत्साहन देना अपरिहार्य है। ग्राम विकास के कार्यक्रमों के दौरान गुदड़ी के लाल मिलना संभव है जिन्हें तराशने की जरूरत होगी। परिषद् द्वारा आयोजित योग शिविर जीवन की मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा परिष्क्रत एवं निर्भ्रान्त करने में उपयोगी एवं कारगर है। याद रहे आत्म शुद्धिकरण चेतना को भ्रांतिमुक्त रखने का श्रेष्ठ उपक्रम है। आध्यात्मिक अनुभव सभी धर्म के सार है। इसलिए परिषद् के लिए अध्यात्म श्रेष्ठ संबल है। जिसको धारण कर विलुप्त हो रही चेतना को पुनर्स्थापित करने के प्रयास जारी है। कल्पना मानव चेतना की दिव्य क्षमता है जो सुख-दुख में अवस्थित है। शरीर चाहे कितना ही सुदृढ़ और आकर्षक हो मगर मन की ऊर्जा और क्षमता के अनुरूप ही कल्पना की दुनिया बनती है।

जीवन प्रबन्धन की व्यावहारिक सीख ही सफल जीवन का संतुलन है जो सामाजिक आयाम में विद्यमान है। समाज के प्रति अपने दायित्वों की पूर्ति करने का सुअवसर परिषद् प्रकल्पों के सुचारू संचालन से संभव है। स्मरण रहे! सामाजिक सहभागिता का प्रमुख आधार है, समपर्क एवं समर्पण भाव: जो विचार को क्रियाशील बनाता है। जीवन और जगत के आयाम को विकसित करने हेतु भावुकता में संतुलन रखना जरूरी है। यदि हमारे चिन्तन और क्रिया में सामाजिक सरोकार एवं समर्पण नहीं है तो हम सफल जीवन से वंचित रह सकते हैं।

-**प्रो. भवानीशंकर रांकावत**, राजस्थान उत्तर

कर्म और फल

पुराणों के अनुसार स्वर्ग वह स्थान है, जहाँ देवता रहते हैं और अच्छे कर्म करने वाले इंसान की आत्मा को भी वहाँ स्थान मिलता है। इसके विपरीत बुरे काम करने वाले लोगों को नर्क भेजा जाता है। भगवत गीता के अनुसार काम, क्रोध और लोभ नर्क के तीन द्वार हैं। वैसे विज्ञान के इस युग में हमने तमाम ग्रह-उपग्रह खोज लिए हैं, लेकिन अब तक ऐसे किसी लोक के अस्तित्व की संभावना नहीं दिखती। वास्तविकता यही है कि स्वर्ग और नर्ग का अस्तित्व समय-समय पर इसी पृथ्वी पर होता है। इसलिए वे दो अलग-अलग स्थान नहीं हैं, बल्कि इस विराट सृष्टि चक्र की विभिन्न अवधियाँ हैं। जो लोग प्रेम से जीवन जीते हैं, उनके लिए यह दुनिया स्वर्ग होती है और जो लोग द्वेष, क्रोध और ईर्ष्या से जीते हैं, उनके लिए यही दुनिया नर्क बन जाती है। सत्य यही है कि हम खाली हाथ इस संसार में आये हैं और खाली हाथ ही हमें जाना होता है, लेकिन इस सत्य को जानने के बावजूद लोग माया के फेर में पड़ जाते हैं। उसके बाद माया उनसे जैसा कहती है, वे वैसा-वैसा करते जाते हैं। इस दौरान वे न अपना-पराया देखते हैं और न वे अधर्म करने से चुकते हैं। अपनों को दुखी करके कौन खुश हो सकता है या दूसरों के साथ अन्याय करके कौन सुखी रह सकता हैं, लेकिन ऐसे लोग इस बात से उस वक्त अनजान रहते हैं। और जब ऐसे लोगों के ऊपर मुसीबतों का पहाड़ गिरता है, तो वे उसे पुनर्जन्म के कर्म बता देते हैं। जबकि सारे कर्म और उनके फल इसी जन्म के होते हैं।

यदि आप अच्छे कर्म करते हैं तो देर-सबेर ही सही उनके अच्छे फल इसी जीवन में आपको मिलेंगे। एक संत एक मार्ग से गुजरते, तो एक महिला अपनी बालकनी से रोज उनके ऊपर कूड़ा फेंक देती। संत कोई शिकायत नहीं करते और चुपचाप आगे बढ़ जाते। करीब एक सप्ताह तक यही क्रम चलता गया। लोगों ने संत से जब पूछा कि आप उस महिला को डांटते क्यों नहीं, तो संत ने कहा कि वह अपना कर्म कर रही है और मैं अपना। खैर, एक दिन संत जब उस मार्ग से गुजरे, तो महिला ने कूड़ा नहीं फेंका। संत को मालूम चला कि महिला बीमार पड़ गई है। वे उससे मिलने गए, तो महिला को अपनी गलती का अहसास हुआ और वह संत के पैरों में गिर गई। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर'। -**आचार्य अनिल वत्स**

सेवा की अनवरत श्रखला! छिपा बड़ौद

क्या एक छोटे शहर की शाखा लगातार 70 महीनों से प्रति मास नेत्र शिविर लगाकर 35611 मरीजों की जांच कराकर 11614 मरीजों का ऑपरेशन सम्पन्न कर सकती है। जी हाँ! यह जज्बा पूरा कर रही है परिषद् की छिपा बड़ौद शाखा। 70वें शिविर में 560 मरीजों की जांच, 155 ऑपरेशन सम्पन्न कराये गये। डॉ. सुरेश मीणा, नन्दकिशोर गेरा, सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय, आनन्दपुर की टीम ने सराहनीय सहयोग की।

मानव जीतना खुली आँखों से दिखता है, उतना ही रहस्यमय भी है

मानव जीवन जितना खुली आँखों से दिखता है, उतना ही रहस्यमय भी है। रहस्य इसलिए है, क्योंकि एक दिन जीता-जागता व्यक्ति इस संसार में नहीं रहता। कुछ समय तक जीवित रह चुकने के बाद भी वह जीते-जागते अपने लोगों के लिए कालांतर में विडंबना बन जाता है। निर्धन, धनवान सभी मनुष्य इससे पीड़ित होते हैं। निर्धन मानव रोजगार के लिए संघर्ष करता है। रोजी-रोटी के प्रबन्ध में स्वयं को प्रवृत्त करता है। परिश्रमधर्मिता के बल पर वह स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है। तन से हष्ट-पुष्ट और मन से नील-निर्मल बना रहता है।

धनवान व्यक्ति के पास जीने के लिए आधारभूत आवश्यक सुख-सुविधाएँ विरासत के रूप में उपलब्ध है। आज संसार में बहुत लोग संसाधन -संपन्न हैं। अपनी समृद्धि की उपयुक्तता सिद्ध करने के लिए उन्हें सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के जीवन को भी समृद्ध बनाने की दिशा में काम करना चाहिए। उन्हें अपनी धन, सम्पत्ति का उपयोग निर्धनता का उन्मूलन करने में करना चाहिए। निर्धन लोगों के परिश्रम को मान-सम्मान देने सहित उन्हें अच्छा पारश्रिमिक भी देना चाहिए। परोपकार का यह सूत्र निश्चय ही संसार में मानवता को बढ़ाएगा। अमीर लोगों को यह विचार अवश्य करना चाहिए कि जीवन क्षणभंगुर है। इसे जितना कल्याणकारी कार्यों में लगाया जाए, उतना अच्छा प्रतिफल मिलेगा।

आधारभूत आवश्यकताओं से पूर्ण मनुष्यों को अपनी दैनिक समझ को नए दृष्टिकोण से परखना होगा। वे अब तक जिस वर्षों पुराने दृष्टिकोण से देखते आए हैं, उसमें अल्प परिवर्तन भी यदि वे करते हैं, तो जीवन का उत्प्रेरक तत्व उन्हें स्पष्ट दिखाई देने लगेगा। नि:संदेह यहाँ से उनका जीवन संघर्षशील लोगों के लिए परोपकारी आयाम बन कर खड़ा होगा। समाज के बड़े और शक्तिशाली लोगों को अपनी तन, मन, धन की शक्तियों को गरीब जनता के उत्थान में लगाना चाहिए। इस उपक्रम से दो काम अवश्य होंगे। गरीबों का भला होगा ही, अमीर भी आनंदित, ऊर्जावान महसूस करेंगे। भौतिक जीवन संबंधी विचारधाराओं का आधिकारिक प्रतिनिधित्व करनेवाले धनी व्यक्तियों से निर्धन लोग भी उपकार-परोपकार का ऐसा पाठ सीखेंगे, तो समाज भी सुखी और समृद्ध अवश्य बनेगा।

मदनगंज-किशनगढ़-एक सक्रिय सार्थक और सेवाभावी शाखा

मदनगंज किशनगढ़ (राजस्थान मध्य) शाखा 2003 में प्रारम्भ हुई। 2005 में एक संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन कर स्थायी सेवा केन्द्र के लिए कोष जुटाया। 2005 में राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका की बचत को सुरक्षित रखा गया। 2013 में राज्य सरकार ने भूमि आवंटन किया। ट्रस्ट निर्माण सेवा केन्द्र के आयामों पर चर्चा और राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम पारीक तथा आर.के.मार्बल के अशोक पाटनी के गहन चिन्तन का प्रतिफल है। यह बहुउद्देश्यीय सेवा केन्द्र। परिषद् ने पूर्व में प्राकृतिक एवं सुरम्य वातावरण में आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त मुक्तिधाम का निर्माण कर सेवा की इबारत लिखनी शुरू की। रिकार्ड समय में 1.25 करोड़ की लागत से निर्मित भवन। दिसम्बर, 2015 में निर्मित भवन के लोकार्पण श्री सावरलाल जाट, केन्द्रीय राज्यमंत्री, भगीरथ चौधरी, विधायक, सीताराम साहू, सभापति तथा मार्गदर्शन कैलाश चन्द्र शर्मा के साथ राष्ट्रीय महामंत्री अजय दत्ता, ने सम्पन्न किया। निर्माण तथा धन संग्रह के लिए समितियों ने टीम वर्क से काम किया। श्री मुकुल विहारी मालपानी भवन में विकलांक पुनर्वास योजना तथा चिकित्सा सेवा कार्य, ऐम्बुलेंस, चलचिकित्सा वाहन आदि बहुउद्देश्यीय सेवा केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना। शाखा द्वारा मुक्तिधाम, नेत्र दान, देहदान आदि प्रकल्प संचालित हो रहे है। लोकार्पण में निर्माण प्रभारी, घनश्याम अग्रवाल (कुचामण वाले) को सम्मानित किया गया। शाखा अध्यक्ष श्याम सुन्दर दरगड़ ने आभार किया।

पाठक पत्र

- **डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी,** बासवाड़ा से लिखते हैं लम्बे विदेश प्रवास के बाद लौटकर 'नीति' के दो अंक देखे। उद्देश्य पूर्ण परिवर्तन देखकर प्रसन्नता हुई। उत्साहवर्धन करती जानकारी, प्रेरक प्रसंग, लघु लेख, टिप्पणी तथा समाचारों में सम्पादकीय नियंत्रण अच्छा लगा। उत्कर्ष मेरठ का नववर्ष पर युगल कैटवाक विवादास्पद संदेश देते हैं।
- Nishant Mittal advised that some questions of Bharat Ko Jano should be published in Niti. I like the matter and content published in Niti.
- Dr. R.K. Modi of Navi Mumbai appreciate thought of K.N. Kumar on Sanskrit language. He further advised to create a vote bank for Sanskrit. Only then state Govt. will this of give Sanskrit teachers. It is suggested to open Sanskrit classes at branch level to promote Sanskrit language. Thank your Dr. Modi.

भारत विकास भवन

परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय भारत विकास भवन के द्वितीय तथा तृतीय तल का निर्माण एवं लिफ्ट व्यवस्था के पूर्ण होने पर राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक के अवसर पर हवन पूजन का आयोजन किया गया। भवन प्रभारी श्री भूपेन्द्र मोहन भण्डारी के सानिध्य में श्री सुरेन्द्र कुमार वधवा, श्री चन्द्रसेन जैन, और श्री विनीत गर्ग ने सपत्नीक यजमान के रूप में पूजा सम्पन्न कराई। सभी पदाधिकारियों ने भवन निर्माण कौशल की सराहना की। राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित मा. वी. भागय्या जी, श्री सुरेश जैन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक परम पूज्य मोहन भागवत जी ने नवनिर्मित द्वितीय तथा तृतीय तल का लोकार्पण किया। उनके साथ माननीय कुलभूषण जी, प्रान्त संघचालक, दिल्ली प्रान्त एवं क्षेत्र के पदाधिकारी तथा हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के पदाधिकारी उपस्थित रहे। माननीय भागवत जी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि भारत विकास परिषद् एक अद्वितीय संगठन है। विकलांग सहायता के क्षेत्र में एक अ-सरकारी संगठन के द्वारा इतना असर-कारी काम हुआ है। यह महत्वपूर्ण हैं राष्ट्रीय गीतों की प्रतियोगिता के नाते संस्कार के प्रकल्पों की छाप समाज पर पड़ती है। वर्तमान समय में साधन सम्पन्न लोग फैशन के लिए सेवा के कुछ काम करते हैं सेवा के नाम पर प्रसिद्धि और लाभ प्राप्त करने वाले संगठन भी हैं। भारत विकास परिषद् एक जीवन्त संगठन है। इस वर्तमान अवधारणा से हटकर हम विकास के लिए सेवा करते हैं। साधारणत: जब सेवा करने वाले लोग होंगे तो सेवा लेने वाले लोग भी होने चाहिए। भारत में हम उच्च मानवीय जीवन मूल्यों के आधार पर श्रेष्ठ व्यवहार का निर्माण करने में प्रयासरत है। यह भारत विश्व को प्रकाश की ओर ले जाने वाला देश है। अपने साधन और सामर्थ्य का उपयोग विश्व कल्याण के लिए करना हमारा लक्ष्य है। विद्या-विवाद के लिए, धन-अहंकार के लिए, शक्ति-दूसरों के कष्ट के लिए लोग प्रयोग करते है। परन्तु हम विद्या-ज्ञान के लिए, धन-दान के लिए और शक्ति-रक्षा के लिए प्रयोग करते है। कार्य बढ़ रहा है, भवन का विस्तार हो रहा है, इसमें सबको आनन्द मिलता है। मैं आपके आनन्द में सम्मिलित हूँ। कार्य जब बढ़ता है तब जिम्मेदारी भी बढ़ती है। अत: दिशा ठीक रखने की आवश्यकता है।

बड़ौत, पश्चिमी उत्तर प्रदेश : बड़ौत निवासी महावीरी (87) के निधन के उपरान्त नेत्रदान कराया गया। सुभारती मेडिकल कॉलेज की टीम द्वारा महावीरी का नेत्रदान किया गया। परिषद् अध्यक्ष संजीव जैन ने व्यवस्था की। इसी क्रम में मधु जैन की मृत्यु उपरान्त नेत्र दान लिया गया।

वैशाली (गाजियाबाद) : शाखा द्वारा रक्तदान महादान के अन्तर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। रक्तदान जागरूकता के अन्तर्गत शिविर में 3 घण्टे में 56 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। इस अवसर पर पदाधिकारी सत्यनारायण ठाकुर, प्यारे लाल राजदान उपस्थित रहे।

इन्दिरानगर-लखलऊ, अवध प्रदेश : शाखा द्वारा चिल्ड्रेन एकेडमी में छात्रों के लिए चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। डॉ. विक्रमजीत सिंह तथा डॉ. सीमा बाजपेयी द्वारा 280 बच्चों की जांच तथा दवायें वितरित की गई।

उदयपुर, राजस्थान दक्षिण : राजकीय सिंधी भाषाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय प्रतापनगर में नशा मुक्ति के लिए जागरूकता की गई। नशा एक रोग है इसका इलाज संभव है। सच्चा दोस्त वही होता है जो कुमार्ग पर चलने से रोक सके। श्री चांदमल ने 45 वर्षीय व्यक्ति की गुटका खाने से मौत का वर्णन किया। छात्रों के पहले से ही नशे को न कहने का अभ्यास करना चाहिए। नशा मुक्ति पर आयोजित परीक्षा में विजेताओं को पुरस्कार दिये गये।

बाड़मेर, राजस्थान पश्चिम : शाखा द्वारा जे.के.लक्ष्मी सीमेंट के सहयोग से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। 42 मरीजों ने जांच करवाई। विपणन अधिकारी अरविन्द व्यास ने भविष्य में सहयोग का आश्वासन दिया।

पाली: शाखा द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता के लिए गोष्ठी का आयोजन किया गया। सीम्स अस्पताल अहमदाबाद के डॉ. सत्य गुप्ता (हृदय रोग) डॉ. हार्दिक शाह (डायबीटीज) डॉ. शैशव (ई.एन.टी.) डॉ. मौलिक (कैसर) डॉ. कल्पेश (टी.बी.) ने दृश्य श्रव्य माध्यम से रोगों की जानकारी तथा उपचार के टिप्स दिये। गणमान्य नागरिक, स्वयं सेवी संगठन तथा परिषद् के सदस्य उपस्थित रहे। संचालन डी.डी. शर्मा ने किया। इस अवसर पर 425 रोगियों का परीक्षण तथा उपचार किये गये। ईको टेस्ट, ईसीजी, पीएफटी तथा रक्त शुगर की जांच नि:शुल्क की गई।

एक टिप्पणी-

मीडिया के मनमाने व्यवहार से सावधान!

जो मीडिया केरल, कर्नाटक, हैदराबाद, दादरी की घटनाओं पर अपनी वैचारिक अनुकूलता के आधार प्रसारण करता है। उससे बचकर रहने की आवश्यकता है। अल्पसंख्यकों, दलितों पर घटित घटनाओं पर परिचर्चा लाइव प्रसारण और अल्पसंख्यकों द्वारा प्रायोजित घटनाओं पर चुप्पी मीडिया की नियति बन गई है। मीडिया के दो रूप देखिए। झारखण्ड में दो मुसलमानों की हत्या हो गई। केस दर्ज़ हुआ, गिरफ्तारी हो गई। लेकिन दिल्ली के चैलन इस घटना को नया रंग देने में मशगूल है। लेकिन कुछ समय पूर्व गौरक्षा आन्दोलन से जुड़े दलित युवक की हत्या पर मीडिया को सांप सूंघ गया। जे.एन.यू. की घटना और कन्हैया के भाषण का लाइव टेली कास्ट दिखाने वाले चैनलों ने अनुपम खेर की मीटिंग में उमड़ी भीड़ से किनारा कर लिया। ऐसी मीडिया से सावधान रहना आवश्यक है।

राजस्थान मध्य : प्रान्त ने रक्तदान, नेत्रदान और देह दान की वार्षिक उपलब्धियाँ प्रेषित की है। कुल 23 शाखाओं ने वर्ष 2015-16 में 3952 यूनिट रक्तदान किया। 6 शाखाओं में 33 जोड़ा नेत्रदान तथा एक देहदान सम्पन्न हुआ। -संयोजक संदीप बाल्दी।

भीलवाड़ा, राजस्थान मध्य : शाखा एवं चारभुजा प्रोसेस के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 135 यूनिट संग्रह हुआ। श्री राजेन्द्र कोठारी, संदीप बाल्दी, कैलाश अजमेरा उपस्थित रहे।

बहरोड़, राजस्थान उत्तर पूर्व : मेहता स्टोन एक्सपोर्ट के सौजन्य से शाखा द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। महिला सदस्यों ने भी रक्तदान किया। कुल 125 यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

भवानीमंडी, राजस्थान दक्षिण पूर्व : शाखा द्वारा सद्सेवा संघ के सहयोग से 101 नेत्र लैंस प्रत्यारोपण शिविर लगाया गया। 255 रोगियों की जांच की गई तथा 75 मरीजों को लैंस लगाया गया। 43 महीने से लगातार शिविर आयोजित कर शाखा द्वारा 384 रोगियों को लैंस लगाया गया तथा 11243 रोगियों की जांच की गई। शाखा ने श्री बाबूलाल शर्मा के निधन पर नेत्रदान कराया। शाइन इंडिया के टिन्बू और महेन्द्र यादव ने नेत्रदान लिया। **बधाई**

मित्र का कर्त्तव्य

चैतन्य महाप्रभु और रघुनाथ पंडित घनिष्ठ मित्र थे। एक बार महाप्रभु अपने मित्र को स्वरचित पुस्तक के अंश सुनाने लगे। प्रारम्भ में पंडित बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु आगे पुस्कत के अंश सुनकर वह उदास हो गये और रोने लगे। यह देखकर महाप्रभु चकित हो गये। 'बोले मित्र' क्या बात है, तुम क्यो रो रहे हो। रघुनाथ ने उत्तर दिया भाई बात यह है कि इसी विषय पर मैंने भी पुस्तक लिखी है। मैं सोचता था कि मेरी पुस्तक अद्वितीय होगी। किन्तु तुम्हारी पुस्तक सुनने के बाद मेरा भ्रम दूर हो गया है। मेरा परिश्रम व्यर्थ हो गया। इसी वेदना के कारण मैं रो रहा हूँ। महाप्रभु बोले! बस इतनी सी बात है। मैं अपने मित्र के लिए सर्वस्व बलिदान कर सकता हूँ। ये काग़ज़ के पन्ने क्या चीज़ है। ऐसा कहकर उन्होंने अपनी पुस्तक नदी में फेक दी। -**धारा मित्र**

बारां : डी.डी. नेत्र सेवा फाउडेशन के अन्तर्गत नि:शुल्क नेत्र शिविर में 34 मरीजों के ऑपरेशन किये गये। 134 रोगियों की जांच की गई। इस अवसर पर विवाह पंजीयन का शिविर भी लगाया गया। स्वच्छता अभियान में कचरा पात्रों की व्यवस्था पर ध्यान दिया गया।

मुकेरियां, पंजाब उत्तर : शाखा द्वारा आयोजित विकलांग शिविर में 151 ऊपरी तथा निचले अंग बांटे गये। शिविर लुधियाना केन्द्र के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

विकलांग न्यास लुधियाना : विकलांग केन्द्र द्वारा फरवरी 2016 में 544 लोगों को कृत्रिम अंग एवं हियरिंग एड मशीन लगाई गई। पोलियों सरजरी, 7 ऑपरेशन सम्पन्न किये गये। 1372 मरीजों का इलाज किया गया।

पटियाला, पंजाब पूर्व : शाखा द्वारा रक्तदान शिविर में 35 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया।

पुरी, उडीशा : शाखा द्वारा जगन्नाथपुरी धाम में बाडी मास इन्डेक्स, ब्लडप्रेशर तथा हाइपर टेंशन जांच शिविर आयोजित किया गया।

शिवपुरी, मध्य भारत उत्तर : शाखा द्वारा रक्तदान उत्सव का आयोजन किया गया। 57 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। जिला चिकित्सालय के भानुप्रताप रायकवार ने रक्त संग्रह किया।

सूचनाएँ

नशा मुक्ति के लिए शाखाओं द्वारा स्कूली बच्चों में नशे के खतरों के बारे में जानकारी प्रदान करना अपेक्षित हैं तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, पान मसाला, शराब आदि के बारे में तथा इनसे होने वाली बीमारियों के बारे में जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। रैली के लिए निम्न पट्टिकाओं का उपयोग करें (1) नशे को जिसने गले लगाया मौत को उसने पास बुलाया। (2) तम्बाकू का अंजाम मौत का पैगाम (3) नशा नहीं जिन्दगी अपनाओ (4) बीड़ी, तम्बाकू आज ही छोड़ें, खुशी से नाता जोड़ें (5) नशे को दूर भगायें घर खुशहाली लायें (6) नशे से होता ये नुकसान, इंसान बन जाता है शैतान (7) शराब करती सबको खराब (8) सोचो समझो बचो नशे से, जीवन जीओ बड़े मजे से (9) नशे की आदत लगाने वाला दोस्त नहीं है दुश्मन है।

बोकारो, झारखण्ड : शाखा द्वारा विकलांग शिविर का आयोजन पटना केन्द्र के सहयोग से सम्पन्न हुआ। शिविर में 67 विकलांगों को कृत्रिम अंग लगाये गये।

नागरोटा बागवां, हिमाचल प्रदेश पश्चिम : प्रान्त की विंकलांग केन्द्र नगरोटा बागवां में कांगड़ा जिले की शकुन्तला देवी और जनक सिंह को कृत्रिम पैर तथा रवीन्द्र कुमार को वैशाखी प्रदान की गई। इस कार्य में सूद ट्रस्ट के ट्रस्टी मनोज सूद का विशेष सहयोग रहा।

पूंडरी, हरियाणा उत्तर : शाखा द्वारा कन्या महाविद्यालय सभागार में कुल 101रक्त दान किया गया। प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष मेजवीर सिंह ने सहभागिता की। प्रिंसिपल डॉ. उषा तुरान ने व्यवस्था देखी।

अम्बाला छावनी : शाखा द्वारा रक्तदान एवं नेत्रदान संकल्प शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान डॉ. भारती के मार्गदर्शन में सिविल हॉस्पिटल अम्बाला द्वारा किया गया। 42 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। माधव नेत्र बैंक के द्वारा 34 व्यक्तियों ने नेत्रदान संकल्प लिया। सेवा निवृत्त प्राचार्य डॉ. देशबन्धु मुख्य अतिथि थे जिन्होंने 60 बार रक्तदान किया है।

हिसार, हरियाणा पश्चिम : शाखा द्वारा एक मेगा मेडिकल शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 2600 मरीजों की जांच की गई। 315 रोगियों की नेत्र ऑपरेशन विभिन्न अस्पतालों में सम्पन्न होगा। 300 मरीजों को चश्मे बांटे गये। 115 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। दिव्यागों को ट्राइसिकिल, कृत्रिम अंग दिये गये। 25 वरिष्ठ नागरिकों को पेशन फार्म तथा वरिष्ठ नागरिक की कार्ड दिये गये। 35 डॉक्टरों ने नि:शुल्क सेवा दी। सांसद दुष्यन्त चौटाला उपस्थित रहे।

स्टीफेन नैप (डेट्रायट)

अमेरिका के ईसाई परिवार में जन्में स्टीफेन नैप ने विद्यार्थी काल में अनेक धार्मिक पुस्तकें पढ़ी, लेकिन उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई। अचानक उन्हें श्री मद्भागवत गीता हाथ लगी। गीता ज्ञान से प्रभावित होकर श्री नैप गत 30 वर्षों से वेदों में वर्णित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन एवं शोध कर रहे हैं। वे संसार में व्याख्यानों के माध्यम से दुनिया को वेदों की राह पर चलने की सीख दे रहे हैं। वे कहते हैं कि मैं भारतीय नहीं हूँ लेकिन मैं पिछले जन्म में भारतीय था और उसी लक्ष्य के लिए काम कर रहा हूँ।

– **बधाई स्टीफेन नैप**

Vivekanand Ludhiana, Punjab North: Branch Organized a *Viklang Camp* where 35 physically challenged were given limbs. Dr. Akshay Vohra sponsored the camp. Certificate to the students of Computer center and sewing center was distributed.

Tejaswini-Allahabad, Prayag: Branch organized a *Medical Checkup Camp* in a rural settlement. 30 ladies and 20 children were checked up and free medicines were distributed. A kid with eye cancer was given an assistance of Rs 10000/- .

CONGRATULATIONS DR. SHRADDHA

Dr. Shraddha is a neuro scientist Vandes Bilt university Northville, USA. She is post doctoral research fellow. The only neuro scientists in this field was invited in the conference of young investigator meeting held at Maneser Gurgaon. The conference was sponsored by India Bio Science group organization. She is daughter of branch president K.K.Pathak.

Birjhora, Assam: Organized a Viklang Camp in ANM Training Center. 12 Tricycles. 1 wheel chair, 1 walking stick, crutches were distributed with the assistance of IOCL. Shri Mahabendre Sharma Chief Manager IOC was present with Shri N.J.Das and BV Kharghariya. A free medical checkup camp at Village soulmari 20 km from Bongaigaon. About 125 patients of the nearby villages will checked up and given free medicine worth Rs. 9000/-. Dr. K.N.D. Sharma conducted the camp. Office bearers of the branch and villagers helped in the camp.

शिक्षा और सामाजिक दायित्व

झाबुआ में जीलेटीन की छड़ेरखे भवन में विस्फोट हो गया। कई भवन धराशाही हो गये। राहगीर, यात्री, बच्चे घायल हो गये। नर्सिंग कॉलेज के लोगों को जैसे ही घटना की ख़बर लगी, नर्सिंग की छात्र-छात्रायें तुरन्त वहाँ पहुँचे। घायलों की इलाज किया। लोगों की सेवा की। जैसे ही घायलों की गाड़ी आती उनकी सेवा और इलाज होता। पैरामेडिकल स्टाप ने उपस्थित भीड़ को रक्तदान के लिए प्रेरित किया। लोगों ने 30 यूनिट रक्तदान किया। शैक्षिक संस्थानों के द्वारा सामाजिक दायित्व निर्वाह करने का एक सफल प्रयास रहा।

Swargate, Maharashtra-2 : The branch helped to Viklang and Needy students through various institutions Bachpan - 161000. Jivdaya Mandal 81000. Chaitanya Sewa Bhavi 41000. Prabhodini 41000 Sajjan Mandal 41000. Kalapini 41000, Tricycle to Viklang, Satara 7000.

राष्ट्रगान सिखाया तो जान पर बन आई

एक मदरसे की शिक्षक को क्या सूझा। वह छात्रों को राष्ट्रगान सिखाने लगा। कोलकाता के मटियाबुर्ज के तालकपुकुर क्षेत्र में काजी मासूम अख्तर ने बच्चों को 'जन गण मन' याद कराना शुरू कर दिया। कट्टरपंथियों ने मदरसे में पहुँच कर काजी को अधमरा कर दिया। वाह रे काजी! चोट ठीक होते ही उन्होंने घोषणा कर दी कि वे बच्चों को राष्ट्रगान अवश्य सिखायेंगे।

प्रौढ़ साधना शिविर में मा. कैलाश जी का उद्‌बोधन-

हम सब परिषद् के कार्य में लगे हैं। अपना देश भारत यह संसार का आध्यात्मिक गुरु बन सकता है। भारत की सही पहचान क्या है। हम देशवासी कौन-सी संस्कृति के हैं। हमारा गौरवशाली अतीत और श्रेष्ठ महापुरुषों का इतिहास रहा है। **हमारी पहचान इण्डिया से नहीं भारत से है**। संविधान में भी हमें India that is Bharat कहा गया है। हमें सही पहचान नहीं मिली। इन कारणों से हम स्वत्व, स्वसंस्कृति से कट गये। हमारे देशवासियों की स्व से जोड़ना चाहिए था। **हमारे पूर्वज कौन है**।

हमारी श्रेष्ठ संस्कृति कैसी है? यह जानने से हमारा देश आगे बढ़ता और उन्नति करता लेकिन इसकी उपेक्षा हुई। इतिहास का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि जब-जब कोई देश अपनी संस्कृति और अपने जीवन मूल्यों से कटा है तब वह देश पतन के गर्त में चला गया। जर्मनी का विभाजन इसका सटीक उदाहरण है। पूर्वी जर्मनी पर साम्यवादियों का शासन और पश्चिमी जर्मनी में लोकतंत्रीय शासन के कारण दोनों देशों के विकास में गहरा अंतर पाया जाता है। प्रमाण है कि पश्चिमी जर्मनी ने अपने महापुरुषों और संस्कृति को अपनाये रखने के कारण पूर्वी जर्मनी से बहुत उन्नति की और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद अपनाने के कारण अपनी संस्कृति से कटा हुआ पूर्वी जर्मनी विकास में पिछड़ गया।

जापान ने भी अपने विकास के लिए अपनी संस्कृति से और संसाधनों से जोड़े रखा। उन्होंने पश्चिमी जर्मनी से कपड़े बनाने की मशीन मंगाई और अपने वैज्ञानिकों से उस मशीन के कलपुर्जे खोलने और दुबारा लगाने का प्रशिक्षण देकर मशीन को तैयार कर लिया। इसी आधार पर जपान में कपड़ों का आधुनिक उद्योग शुरू हुआ। इस प्रकार अपने संसाधनों और वैज्ञानिक प्रतिभा के आधार पर जापान का औधोगिक विकास हुआ और उसने अमेरिका जैसे देशों को चुनौती देकर अपने उद्योगों का विकास किया। अपने देश में हम अपनी संस्कृति को भूल गये हैं। गुड मार्निंग कर सकते हैं वन्देमातरम को भुला बैठे हैं। कभी संयुक्त राष्ट्र संघ ने एक प्रस्ताव के द्वारा प्रत्येक बालक को मातृभाषा में शिक्षा देने की अपील की थी। अंग्रेजी सीखने का विरोध नहीं है लेकिन अपने देश के स्वत्व को जानने के लिए नई पीढ़ी को नई दिशा और प्रेरणा दे सकते हैं। एक बार राष्ट्रपति डॉ. कलाम ने युवा छात्रों से पूछे क्यों पढ़ रहे हैं, क्या बनना चाहते हैं। एक बालक ने कहा कि मैं भारत का दृष्टिहीन राष्ट्रपति बनना चाहता हूँ। कलाम ने पूछा दृष्टिहीन क्यों कह रहे हो। उसने कहा मैं दृष्टि बाधित हूँ। आगे पढ़ो, उन्होंने कहा देश के हर नागरिक को जीवन में बड़ा लक्ष्य लेकर जीना चाहिए। छोटा लक्ष्य हमें कभी बड़ा नहीं बनने देगा। युवा को लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प मिले तो वह बहुत कुछ कर सकता है। बंगलौर में संस्थान के निदेशक रहते हुए कलाम का ड्राइवर खाली समय में पढ़ता रहता था। उन्होंने पूछा क्यों पढ़ते हो तो उसने बताया कि परिवार में माँ बाप हैं, बच्चे हैं उन्हें अच्छी शिक्षा देने के लिए मैं कोशिश कर रहा हूँ। कलाम ने उसे आगे पढ़ने और बढ़ने का आशीर्वाद दिया, उसने पढ़ाई की, परीक्षा दी और सफल हो गया। उसने एम.ए. किया, पीएचडी की। राष्ट्रपति बनने के बाद एक बार वह युवक राष्ट्रपति से मिलने गया। कुशल क्षेम के बाद पूछा क्या कर रहे हो। युवक ने बताया मैं विश्वविद्यालय में पढ़ाता हूँ। एक कार चालक प्रेरणा के कुछ शब्द पाकर वि.वि. में प्रोफेसर बन गया। हमारे चारों तरफ ऐसे नौजवान हैं। उन्हें दिशा और प्रेरणा देने का काम हमें करना है। संस्कृति और इतिहास से उन्हें जोड़ना है। अभिमन्यु गर्भावस्था में संस्कार की कथा हम सब जानते है। कहोड़ ऋषि-सुजाता के पुत्र अष्ठावक्र ने शास्त्रों का ज्ञान गर्भावस्था में ही प्राप्त कर लिया था। गुरु तेग बहादुर के पुत्र गुरु गोविन्द सिंह का 350वाँ प्रकाशोत्सव इस वर्ष मनाया जा रहा है। कहते हैं कि मुगल शासन के अत्याचारों से ग्रस्त कश्मीरी पंडित गुरु तेग बहादुर के पास आये, फरियाद की। गुरुजी ने कहा कि इस समय एक तेजोमय पुरुष के बलिदान की आवश्यकता है। बलिदान कौन दें, सभी मौन बैठे थे। इतने में बालक गोविन्द राय ने आकर पूछा आप लोग क्यों मौन चिन्तन में बैठे हैं। एक तपस्वी के बलिदान की आवश्यकता है। बालक गोविन्द राय कहता है कि आपसे श्रेष्ठ कौन है। आपको ही बलिदान देना चाहिए। संस्कार की यह परिभाषा जीवन के व्यवहार में कही जाती है। 34 साल की उमर में गोविन्द राय ने खालसा पंथ की स्थापना की और गोविन्द सिंह बने। यह परम्परा को याद करके अपने जीवन को सफल करने का विचार करें।

चिन्मय मिशन के अधिष्ठाता स्वामी तेजोमयनन्दजी ने प्रौढ़ लोगों के बारे में कहा कि प्रौढ़ समाज और परिवार के लिए शब्दकोष समान है। परिवार के मुखिया को सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान करना चाहिए। प्रौढ़ वर्ग को परिवार में अनावश्यक टोका-टोकी करने की, उपदेश देने की आवश्यकता नहीं है।

हम समाज सेवा के काम में लगे। समाज को प्रेरणा देने वाले बनें। मातृशक्ति भी अड़ोस, पड़ोस के बच्चों को शिक्षित करने, संस्कारित करने का कार्य करें। इस प्रौढ़ साधना शिविर में हम जीवन की ऐसी दिशा का संकल्प लेकर जाए।

जीवन का उद्देश्य - जितेन्द्र वीर गुप्त, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

भिन्न-भिन्न संगठन देश के विकास और उत्थान के लिए कार्य कर रहे हैं। सभी सफलतापूर्वक बढ़ रहे हैं। मनुष्य का स्वभाव है जबतक परिणाम दिखाई न दे तबतक ऐसा लगता है कि कुछ नहीं हो रहा है। सब व्यर्थ है।

यह चिन्तन उचित नहीं है। दिखने योग्य प्रभाव समय आने पर ही दिखाई देगा। इसीलिए कहा है कि हर चोट का असर होता है परन्तु श्रेय आखिरी चोट को मिलता है। यह आखिरी चोट कब होगी, कौन-सी होगी यह नहीं कहा जा सकता। अत: चलते चले चलते चलें। Go on hammering It is bound to break. धैर्य के साथ जीवन पर्यन्त काम करना वीर पुरुषों का काम है। निराश होकर बीच में रूक जाना कायरता है। यह भारतीय परम्परा नहीं है।

भारतीय संस्कृति में हमारी आस्था है। यह हमारा संकल्प भी है। यह संस्कृति हमें सदा काम करने की प्रेरणा देती है। व्यक्ति निर्माण-राष्ट्र निर्माण, देश जागेगा-विश्व जागेगा, कृण्वन्तो विश्वमार्यम यह हमारी आस्था और श्रद्धा है, मात्र नारे नहीं है। एक विशाल राष्ट्र व्यापी परिवार का सदस्य होने से एक समाधान का भाव जागृत होता है कि हमारा जीवन सार्थक है। अन्तिम समय में यह समाधान होगा कि भगवान ने जिस काम के लिए भेजा था उसे करके जा रहा हूँ। यही समाधान है, सन्तोष है। यही जीवन की सफलता है।

किसी व्यक्ति को किसी भी प्रकार के इलाज की जरूरत है

तो आप माननीय नरेन्द्र मोदी जी की ड्रीम योजना, ''**अमृतम योजना**'' का लाभ अवश्य लें...

इसमें आपको 2 लाख रुपये तक का इलाज राहत फंड से होगा तथा आजीवन आपकी दवाओं का खर्च भी सरकार वहन करेगी। कई बड़े अस्पतालों में इसके लिए विशेष काउन्टर बनाये गये हैं ...

और यदि किसी 12 साल से कम उम्र के बच्चे को काई तकलीफ है, जैसे दिल में छेद, कटे होंठ, भेंगापन आदि तो इसका ऑपरेशन भी पूरी तरह से नि:शुल्क होगा...

यदि आपको इस योजना के बारे में कोई सहायता या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी चाहिए तो आप नीचे दिये सम्पर्क सूत्रों पर बात कर सकते हैं...

Email : mayojanagujarat@gmail.com, Office : 91+-79-23265301,Fax : +91-79-23253311, Toll free : 1800-233-1022

खून का रिश्ता

मत बहाओ खून, दो इसको भले के वास्ते,
तुमपे खुल जाएंगे हजारों जिन्दगी के रास्ते।

आज भाई ही भाई के खून का प्यासा हुआ,
कितने ही घर राख हुए है फसादी आग से।

खून की कमी से जब कोई मरा तो यू लगा,
भूखा कोई चल दिया जैसे फलों के बाग से।

बाँटने से कोई चीज कभी कम होती नहीं,
और बढ़ जाती है ये दुआ भरी आवाज से।

जगभलाई के लिए तय कोई समां होता नहीं,
रक्तदाता बनने का कर लो फैसला तुम आज से।

श्रीकृष्णा सैनी, अम्बाला शहर

क्षेत्रीय मंत्री डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी, बासवाड़ा के बाल रोग विशेषज्ञ है। परिषद् की वनवासी सहायता योजना में योगदान करते हैं राजस्थान सरकार द्वारा किशोर न्यायालय बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया गया। - बधाई।

कपड़े हो गए छोटे, लाज कहाँ से आए।
रोटी हो गई ब्रैड, ताकत कहाँ से आए।
फूल हो गए प्लास्टिक के, खूशबू कहाँ से आए
चेहरा हो गया मेकअप का, रूप कहाँ से आए।
शिक्षक हो गए टयूशन के, विद्या कहाँ से आए।
भोजन हो गए होटल के तंदरुस्ती कहाँ से आए।
प्रोग्राम हो गए केवल के, संस्कार कहाँ से आए।
आदमी हो गए पैसे के, दया कहाँ से आए।
धंधे हो गए हायफाय, बरकत कहा से आए।
भक्ति करने वाले स्वार्थी हो गए, भगवान कहाँ से आए।
रिश्तेदार हो गये व्हॉटसऐप के, मिलने कहाँ से आए।

मनुष्य का अपना क्या है...!?
जन्म : दूसरे ने दिया, **नाम** : दूसरे ने रखा,
शिक्षा : दूसरे ने दी, **रोजगार** : दूसरे ने दिया, और....
श्मशान : दूसरे ले जायेंगे, **तो व्यर्थ में घमंड किस बात पर करते हैं लोग..!**

राजस्थान मध्य

कुवारिया (राजसमन्द) : शाखा द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत नगर के प्रमुख मार्गो पर कचरा पात्र नगर पंचायत के सहयोग से स्थापित किये गये।

राजस्थान पश्चिम

बाड़मेर : शाखा द्वारा नि:शुल्क कोचिंग में 12 निर्धन बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं। भारत लैब द्वारा 31 रोगियों का न्यूनतम दर पर परीक्षण सुविधा उपलब्ध कराई गई। 137 रोगियों को नि:शुल्क थेरेपी प्रदान की गई। एम्बुलेंस में 13 रोगियों की सेवा की गई।

राजस्थान दक्षिण

भामाशाह-उदयपुर : शाखा में होली पर चित्रा मेनरिया ने रसिया और मीरा शर्मा ने दूल्हे की चाहत पर ठिठोली करते गीत प्रस्तुत किये। सुलोचना अग्रवाल, कुसुम माहेश्वरी ने लोकगीत गाये। शाखा द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए हरित बाल गोकुलम कार्यक्रम में विद्यालय के निदेशक तेज सिंह मेहता ने अतिथियों का स्वागत किया। वक्ताओं ने ऑक्सीजन देकर कार्बनडाई ऑक्साइड गैस को सोखने वाले पेड़ों का महत्व बताया। स्वच्छता, जल संरक्षण और पोलिथिन प्रयोग रोकने की शपथ दिलाई गई। अध्यक्ष यवन्ती कुमार बोलिया ने विद्यालय में पट स्थापित किया।

राजस्थान दक्षिण पूर्व

बारां : शाखा द्वारा बुराइयों की होली जलाकर व्यसन छोड़ने का आग्रह किया गया।

राजस्थान पूर्व

हिण्डोन : शाखा द्वारा होली मिलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

राजस्थान उत्तर पूर्व

प्रताप-जयपुर : शाखा द्वारा सरदार भगतसिंह के बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया। वक्ताओं ने सरदार भगत सिंह के जीवन के प्रंसग स्मरण किये। शाखा द्वारा 23 मार्च को शहीदी दिवस स्थानीय भगत सिह पार्क में आयोजित किया जिसमें शाखा सदस्यों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर शहीदों को श्रद्धजलि दी।

भिवाड़ी : शाखा द्वारा मोहनराम मंदिर खोली धाम में धार्मिक परिक्रमा कर बाबा का आशीर्वाद लिया। डॉ. रूप सिंह ने 200 बच्चों को नशा न करने की शपथ दिलाई। सदस्यों ने फूल, हर्बल रंग तथा चन्दन से होली मनाई। परिक्रमा मार्ग पर नशा मुक्ति के बैनर लगाये। आयोजन में भिवाड़ी मैन्यूफक्चरिंग संस्था, अग्रवाल महासभा, इस्पात चैम्बर, सालासर सेवा समिति, खण्डेलवाल समाज, नगर परिषद्, लायन्स, वैश्य समाज, रोटरी, गौशाला, श्याम जागृति संस्थान ने सहयोग किया।

मध्य भारत उत्तर

वीर तात्याटोपे-शिवपुरी : शाखा द्वारा नगर के माधव चौक पर लांस नायक हनुमन्थप्पा को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। परिषद् सदस्यों के साथ नगरवासियों ने मोमबत्ती जलाकर दो मिनट का मौन रखा। शहीद हनुमन्थप्पा सियाचिन क्षेत्र में 35 फीट बर्फ के नीचे 6 दिन तक दबे रहकर जिन्दा निकले थे। जीवन का संघर्ष करने हुए आर्मी अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली।

महाकौशल

दामोह : दामोह नगर के गणमान्य नागरिकों को भारत विकास परिषद् की शाखा स्थापना के अवसर पर प्रान्त अध्यक्ष ने परिषद् के संस्कार और सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुए सेवा कार्यों में जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता से ओत प्रोत क्लबों तथा परिषद् की शैली का वर्णन करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य संस्कृति और जीवन मूल्यों का विकास करना है। इस अवसर पर रामनरेश पटेल, हरिशंकर ठाकुर, डॉ. इन्दुकान्त द्विवेदी प्रान्त अध्यक्ष मौजूद रहे। समरसता विभाग के श्री बहादुर सिंह सामाजिक सद्भाव जागने का आग्रह किया।

काशी प्रदेश

काशी-वाराणसी : शाखा ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के अन्तर्गत कार रैली का आयोजन किया। 75 महिलों ने अपनी कारे सजाकर रैली में भाग लिया। रैली को जिलाधिकारी श्री राजमणि यादव ने रवाना किया। मंडलायुक्त श्री नितिन, रमेश, गोकर्ण ने समापन किया। जे.एन.यू प्रकरण के विरोध में शान्ति

मार्च, आश्रय ट्रस्ट के कमजोर व गरीब बच्चों को सहायता दी गई।

आजमगढ़ : शाखा द्वारा सम्पन्न होली पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चिकित्साधिकारी डॉ. बी.के. अग्रवाल ने बधाई दी।

हस्तिनापुर

समृद्धि मुजफ्फरनगर : शाखा द्वारा वसन्तोत्सव पर क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। प्रेसिडेन्ट एलेवन टीम ने 18 ओवर में 76 रन बनाए। सचिव ऐलेवन ने 12 ओवर खेलकर मैच जीत लिया। रनिंग कमेंट्री राजेन्द्र और गौरव ने की। महिलाओं ने क्रिकेट के अलावां म्यूजिकल चेयर रेस, अंत्याक्षरी का आनन्द लिया।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश

साहिबाबाद : होली पर भजन संध्या कार्यक्रम हुआ। पुरुष सदस्य ग्वाला वेष, महिलाएं राधावेष, बच्चे राधा कृष्ण वेष में सम्मिलित हुए। शैली गोयल ने फूलों की होली खेली। पुरस्कार बांटे गये। शाखा द्वारा ऐतिहासिक तीन दिनों का नव वर्ष मेला नगर के स्कूलों तथा नागरिकों के लिए चर्चा का विषय रहता है। शाखा द्वारा स्कूलों में कूलर, स्टेशन पर पानी, वाटर हारवेस्टिंग, होम्योपैथिक, ऐलोपैथिक चिकित्सा, टेलेन्ट हन्ट, कोचिंग, नेत्र ऑपरेशन तथा मोक्षरथ की स्थायी व्यवस्था है।

नारी शक्ति

नारी अबला नहीं रही अब शक्तिपुंज वह भारी है
सभी परीक्षाओं में देखो, उसने बाजी मारी है।
बनी मुख्यमंत्री राज्यों में, राष्ट्रपति पद धारी है।
इन्जीनियर, डॉक्टर, टीचर, सभी पदों पर नारी है।
पुत्री, पत्नी, बहिन सफल वह, भारत माता प्यारी है।
शिव भी शव है शक्ति बिना तो, आदि शक्ति तू न्यारी है
सफल जनों की रही प्रेरणा, नारी की बलिहारी है।

-डॉ. गार्गी शरण मिश्र 'मराल'

रुहेलखण्ड

मैत्री मुरादाबाद : शाखा द्वारा होली मिलन के अवसर पर कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें डॉ. माहेश्वरी तिवारी, योगेन्द्र ब्योम, अशोक विश्नोई, अम्ब्रीश गर्ग, अर्चना गुप्ता ने होली की ठिठोली पर रसीली रचनाएँ प्रस्तुत की।

अमरोहा : शाखा द्वारा होली पर रसायनिक रंगों का निषेध कर होली मनाई गई। ईशिक, रिधिमा, कलिका, अदिति, जय ने सबको खूब हंसाया।

ब्रज प्रदेश

एटा : शाखा द्वारा भगत सिंह के बलिदान दिवस (23 मार्च) पर सभा की गई। युवा गायक जावेद मासूम ने कहा ''हूँ मुसलमान न इतना भरम कीजिए, धरम जाति का न इतना करम कीजिए, गर जरूरत पड़े देश को मेरे लहू की, सबसे पहले सर कलम कीजिए''। शाखा द्वारा स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर प्रश्न मंच तथा चित्र में रंग भरो प्रतियोगिता आयोजित की गई। रंगभरों में सोनल, आयुष, नव्या, नेहा, प्रदीप को पुरस्कृत किया गया। प्रश्नमंच में नेहा, अनुभव, शिवान्जलि, सोनी, प्राची, रजत, सूयांश, अभिनव आदि को सम्मानित किया गया।

जीते जीते रक्तदान- मरणोपरान्त नेत्रदान

मरने के बाद एक नेक काम करते जाइए,
दो अमूल्य मोती दान करते जाइए,
इन्हें न जलाएं न खाक में मिलाएं,
इस बेशकीमती धन को दान करते जाइए,
ये चिराग जलने दें मत इन्हें बुझाइए,
मरने के बाद एक नेक काम करते जाइए।।
अन्धों की जिन्दगी में दूर-दूर पर है ठोकर,,
वो काट रहे जीवन, नैन बिना रोकर,
बेकार किसी की जान को आसान करते जाइए,,
मरने के बाद एक नेक काम करते जाइए,
सूनी भयानक रात लगे चाँद बिना,
वैसे बेनूर चेहरा लगे आँख बिना,
उजड़े चमन दीप जलाकर फिर बहार लाइए,
मरने के बाद एक नेक काम करते जाइए।।
मौत से बदत्तर आँखों का अंधेरा,
मुदत्त से काली रात मिटे फिर हो सवेरा,
ऐसे किसी मजबूर का भगवान बनते जाइए,
मरने के बाद एक नेक काम करते जाइए।।

-भोजाराम मैहता, ऐलनाबाद

फीरोजाबाद : शाखा द्वारा होली मिलन कार्यक्रम में वंदना अग्रवाल व तनु सिंघल ने गीत गाये। श्रद्धा और ममता अग्रवाल ने होली पर प्रश्न मंच किया। होली के गीतों पर झूमे सदस्य परिवारों ने शुभकामनाएँ दी। शाखा ने शास्त्रीय संगीत की गायन प्रतियोगिता में वसंत बहार, राग रागिनी तथा मेघ मल्हार संगीत प्रतियोगिता आयोजित किया। सभी टीमों को 5 राउण्ड मिले। संयोजिका वन्दना और तनु सिंघल ने संचालन किया। श्रद्धा और सीमा ने गायन प्रतिभा से सभी का मन मोहा। डॉ. मयंक

भटनागर मुख्य अतिथि रहे।

आगरा संस्कार : शाखा ने सामूहिक सरल विवाह के अन्तर्गत बुर्जी वाला मंदिर प्रताप नगर में 10 कन्याओं का विवाह आयोजन किया। वर यात्रा चितारहण मंदिर से प्रारम्भ हुई। विवाह आयोजन में रेखा दीवान, पूनम पाटनी, नीहारिका, ममता, कुसुम, सविता तोमर, सुनन्दा, मीरा, दीपा ने विशेष सहयोग किया।

प्रयाग

प्रतापगढ़ : शाखा द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत भुवालपुर किला के प्राथमिक तथा जूनियर स्कूलों में बच्चों की शारीरिक सफाई का संदेश दिया गया। वृक्ष के महत्व पर नाटक प्रस्तुत हुआ। प्राचार्य डॉ. ब्रजभान सिंह ने भरपुर सहयोग दिया। जिला अध्यक्ष प्रताप बहादुर कुन्दवानी ने 125 बच्चों को सम्मानित किया।

ऐसे थे वीर सावरकर

- अकेले स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें दो जन्मों का कारावास मिला।
- 1857 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' पुस्तक को दो देशों ने प्रतिबंधित कर दिया।
- प्रथम भारतीय राजनीतिज्ञ जिन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।
- प्रथम भारतीय विद्यार्थी थे जिन्हें इग्लैण्ड के राजा के प्रति वफादारी की शपथ न लेने के कारण वकालत करने से रोक दिया गया।
- तिरंगे में धर्मचक्र लगाने का सुझाव दिया था जिसे माना गया।
- राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का चिन्तन किया। बंदी जीवन के बाद अस्प्रश्यता तथा सामाजिक सद्भाव के लिए आन्दोलन किया।
- अंडमान जेल की दीवारों पर कील और कोयले से कविताएँ लिखी, याद किया और 10000 पंक्तियों को जेल से छूटने पर पुनः लिखा।

तेजस्विनी-इलाहाबाद : शाखा द्वारा राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महिला रोग विशेषज्ञ द्वारा 30 महिलाओं एवं बाल रोग विशेषज्ञ द्वारा 20 बच्चों की स्वास्थ्य जांच कर दवा वितरण किया गया। आँख के कैंसर से पीड़ित एक वर्षीय बच्चें के इलाज हेतु 10,000/- रुपये की सहायता की गई। इस आयोजन में उषा, नूतन, मधुबाला, स्नेह आदि का सहयोग रहा।

दक्षिण बिहार

प्रान्त द्वारा 'राष्ट्रीय अस्मिता' विषय पर व्याख्यानमाला आयोजित की गई। पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री संजय पासवान ने नव व्याकरण, नयी दृष्टि एवं सम्पन्न चेतना पर बल दिया। डॉ. अमरनाथ सिन्हा, पूर्व कुलपति ने पंथ निरपेक्षता, भारतीयता, आध्यात्मिक चेतना जाग्रत करने वाली आस्था को मूल आधार माना। डॉ. पूनम सिंह, दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष ने दार्शनिकता को भारतीयता के कण-कण में विद्यमान बताया। प्रो. रणजीत वर्मा प्रतिकुलपति ने वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता पर बल दिया। श्री नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने भारतीय चेतना में व्याप्त समन्वय की भावना पर बल दिया। गोष्ठी में डॉ. रमेशचन्द्र सिन्हा, दर्शन शास्त्र विभाग सहित सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी मौजुद रहे।

कोशी बिहार

बेगूसराय : शाखा द्वारा होली मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हरियाणा पश्चिम

हांसी : शाखा द्वारा फूलों की होली खेली गई। भजन गाये गये। अंजू गावड़ी ने अध्यक्षता की।

पंजाब उत्तर

बटाला : शाखा द्वारा 100 मेधावी छात्र-छात्राओं को सम्मान, प्रशस्तिपत्र तथा पुरस्कार प्रदान किये गये।

दिल्ली उत्तर

प्रशान्त विहार: शाखा द्वारा होली मिलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रंगारंग कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सतीश चावला ने की। वरिष्ठ नागरिकों को प्रतीक चिन्ह दे कर सम्मानित किया गया। वार्षिक आख्या विजय गर्ग तथा आय व्यय लेखा अशोक अरोड़ा ने प्रस्तुत किया। राकेश शर्मा एण्ड पार्टी द्वारा सुन्दरकाण्ड का संगीतमय पाठ सम्पन्न हुआ। सदस्य परिवारों ने भक्ति संगीत का आनन्द लिया। अन्त में भण्डारा सम्पन्न हुआ। संयोजिका सुरेश गावा द्वारा महिला स्वास्थ्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें डॉ. विजय प्रभा और आराधना शर्मा ने महिला रोगों तथा स्वास्थ्य के बारे में विस्तार से चर्चा की। प्रश्नोत्तर द्वारा रोगों का जिज्ञासा समाधान भी हुआ। श्री सतीश चावला, विजय गर्ग समेत सभी सदस्यों ने सहयोग किया।

ODISHA

Chandrashekharpur : The Branch organized Mahila Sahbhagita, the lady members of three branches participated in Shankh Radan, Alpana, Mahendru,

Hulahuli, Dhadgdh mati musical chair. Artist P.B. Sehu and Binodini Satpathy were the judges.

RAJASTHAN SOUTH

Mewar : 8 member group of the branch visited Hong Kong Sanjatan and Makau. During their visit the member met Indian citizens living in the country. The team described growth and development programme implemented in our country. The team was warmly welcomed by NRIs.

जीवन एक संघर्ष है

संघर्ष क्या है?
संघर्ष टकराव है
विभिन्न्ता से
विभिन्नता क्यों है?
सरसता के लिए
जीवन के हर पहलू में
देखिये विभिन्नता के रूप
जीवन है तो मौत है
दुख है तो सुख है
प्यार है तो नफ़रत है
मित्र है तो शत्रु है।
लगाव है तो त्याग है।
प्रशंसा है तो कटाक्ष है
रचना है तो विनाश है
सहयोग है तो टकराव है,
युद्ध है तो शान्ति है।

विश्वास है तो भ्रांति है
धरती है तो आकाश है
अंधेरा है तो प्रकाश है
दिन है तो रात है।
मानव है तो दानव है
कुछ भी देखे कही भी देखे
द्वंद है, तनाव है आखिर क्यों?
ईश्वर की लीला अपरंपार है
इस द्वंद का भी रहस्य है उद्देश्य है
ईश्वर चाहता है
समस्या है तो हल ढूँढ़े
आगे बढ़े पथ ढूँढ़े
संघर्ष है तो जीवन है
अन्यथा
जीवन नीरस है बेकार है

–**विश्व मोहिनी,** पंचकुला

MADHYA BHARAT WEST

Ujjain : The branch is working in the field of *Rain Water Harvesting Scheme* for last six years. The branch has installed 1072 systems in the Ujjain region. The demonstration of rain water harvesting scheme Singastha 2016 will help to motivate the laks of people to save water and install RWHS in their residence. The propose to charge rent Rs. 750 per head per day from BVP members who wants to avail facilities in sewadham. Sengsth 2016. T.Shrits distributed with BVP and logo will be available @ 150 per.

PUNJAB NORTH

Dr. Kitchlu, Ludhiana : Branch organized a special cultural programme with the help of Viklang Children. 11 school and 100 students participated. Giddah by deaf and dumb students, a mini skits on drug addiction. 15 students were honoured for games and sports and skits, Kaushal brothers sponsored the programme and assured to help in future. Mr. Ravinder Mittal appreciated the mission oriented efforts by BVP.

DELHI NORTH

Prashant Vihar : Rohini - Prashant Vihar branch organized a seminar on prevention of disease in Indian Culture. About 100 ladies participated in the seminar.

West Patel Nagar : Branch organized the programme. Chief Guest was the Nazma Heptulla could not attend the programme. Mrs Anu Manochav spoke about women empowerment. It was followed by Kathak dance a Natka by MCD school children was played on *Beti Bachao Beti Parao.* Girish Khatter conducted a quiz on moment achievements in different fields.

DELHI SOUTH

Alaknanda : Branch Organized Samuhik Saral Vivah of 3 couples -1st couple both blinds, 2nd couple both physically handicapped and 3rd couple both very poor. The each couples were given: Steel Almirah, LPG Cooking Gas connection and all domestic and kitchen appliances for a family. Silver Bridal Jewelry with Mangal Sutra& Engagement rings for the couples. The marriages (Jaimala & Pheras) were performed with full Vedic rights. Marriage programme was attended by Shri S.K.Wadhwa, Shri S.C.Gupta, Shri S.K.Rastogi, Shri Ashok Azad, State office bearers of Delhi South, Pawan Agarwal, Ramamurthy, Pawan Goel, Vimal Arora. National Secretary Smt. Sashi Azad supervised the whole ceremony with Vinay Khanna Convener.

KARNATAKA SOUTH

Badaranya Bangaluru : Branch celebrated women's day. A Cultural programme was organized with devotional songs by Jayanthi Hegde and Nandini Gautam.

Badarayana Shakha : Branch conducted a programme captioned "Padakusumanjali" in commemoration of Saint Purandara Dasa.

A musical recital of krities by Purandaradasa was presented by Sri Jayanth Hegde and Smt. Nandini Hegde, software Engineers and music lovers with description/ lecture by Smt. Vijaylakshmi. The programme was well attended by officer bearers and members of shakhas and prant and national level. The audience was delighted and expressed their appreciations of the programme.

***

फैशन

यात्रा के दौरान, एक युवक बैठा था मेरे पास,
पहना हुआ था फटे हुए लिवास
उसकी दशा देख कर मुझे दया आई
मैंने एक बात उसे बताई
कभी भी सहायता चाहिए तो मुझे बताना,
अमीरी गरीबी तो वक्त का खेल है।
गरीबी में मत घबड़ाना।
युवक तुरन्त हरकत में आया
गुस्से में गुर्राया, अंकल सीमा में रहिए,
बेवकूफों की तरह कुछ भी न कहिए।
ये कपड़े मेरे ब्रांडेड कम्पनी के हैं,
ये तो तीन हजार में खरीदे हैं।
मैंने कहा क्यों मजाक करते हो
यार इन फटे कपड़े के तीन हजार
बेवकूफ मैं नहीं तुम बन रहे हो, बेवजह इतना तन रहे हो
बर्तन के बदले जो फटे पुराने कपड़े घरों से ले जाती है।
वही कपडे तो वो बाजार में बेच कर आती है।
विज्ञापनकर्ता उनपर कमाल दिखाते हैं
जिन्हें तुम जैसे लोग हजारो रुपये में खरीद लाते हैं।
काश! मुझे भी मालूम होता ऐसा भी आयेगा जमाना
तो मैं भी संभाल कर रखता
बचपन के फटे कपड़ों का ढेर पुराना
गरीब अपनी गरीबी छिपाने के लिए
फटे कपड़ों पर पैबन्द लगाते हैं।
और अमीर लोग कपड़े फाड़ कर
अमीरी की झलक दिखलाते हैं।
संस्कारों से अब बढ़ती जा रही दूरी है,
आखिर फटे कपड़े पहनना क्यों जरूरी है। -**युगराज जैन**

संवेदनशीलता

पोस्टमैन हर महीने दरवाजे पर दस्तक देता। आ रही हूँ। आवाज आती। प्रतीक्षा करता। एक दिव्यांग लड़की घिसट-घिसट कर आती, दरवाजा खोलती मनीऑर्डर लेती। यह क्रम कई महीने चलता रहा। दीवाली का त्यौहार आया। पोस्टमैन ने दरवाजे पर दस्तक दी। लड़की ने दरवाजा खोला और पोस्टमैन अंकल को एक पैकेट देते हुए बोली। अंकल इसे घर जाकर खोलना। घर जाकर पोस्टमैन ने देखा उसके नाप के जूते भेंट किये गये थे। महीनों आते हुए लड़की ने पोस्टमैन को नंगे पैर देखा था। पोस्टमैन दूसरे दिन अपने अधिकारी के पास गया। सर मेरा इस क्षेत्र से ट्रांसफर कर दीजिए। अब मैं यहाँ काम नहीं कर सकता। पोस्ट मास्टर के बार-बार पूछने पर उसने बताया कि उस लड़की ने मुझे नंगे पैर देख कर जूते उपहार में दिये। लेकिन मैं उस लड़की के पैर वापस नहीं कर सकता। अत: मैं उसका समाना कैसे करूँगा।

कहोड़ ऋषि-सुजाता के पुत्र अष्ठावक्र

सुजाता ने चार साल साधना की। शिष्यों को पढ़ाने में वह मदद करती रही। गर्भ में पल रहे शिशु के लिए वह सब काम करती। ऋषि कहोड़ के पढ़ाने के समय एक आवाज आई। पिताजी आप इतने विद्वान हैं, बालकों को शुद्ध तो पढ़ाइये। कई बार आवाज सुनकर ऋषि समझ गये कि हमसे ही कहा जा रहा है। पिता क्रुद्ध हो गये और बोले अभी पैदा नहीं हुआ और पिता को रोकता-टोकता है। जा जब शरीर से टेढ़ा मेढ़ा होकर जन्म लेगा तब पता चलेगा। सुजाता तो सन्न रह गई, रोने लगी। तब ऋषि बोले-चिन्ता मत कर यह जन्म लेकर विद्वानों से शास्त्रार्थ करेगा और समंगा नदी में स्नान कर सुन्दर युवक हो जायेगा। बारह साल का युवक अष्टावक्र राजा जनक की सभा में शास्त्रार्थ करने के लिए जाता है। सभा में उसे देखकर सब हंसने लगे, राजा भी हंसने लगे। वह युवक भी जोर से हंसने लगा। राजा ने युवक से पूछा हम सब तो तुमको देखकर हंस रहे हैं। तुम क्यों हंस रहे हो। युवक कहता है कि मैं राजा की सभा में विद्वानों से शास्त्रार्थ की इच्छा से आया था लेकिन यहाँ तो सब चर्मकार है। ऐसा सुनकर राजा क्रोधित हो गये। सभा में शास्त्रार्थ हुआ और अष्टावक्र विजयी हुए। बाद में समंगा नदी में स्नान कर सुन्दर युवक बन गये।

अमेरिका में मानवाधिकार के नाम पर कानून का मजाक

मेरे एक मित्र अमेरिका में अपने बेटे से मिलने के लिए गये। कुछ दिन बीतने के बाद मैंने अपने मित्र के समाचार जानने के लिए फोन किया। पुत्र ने बताया कि पिता जी ने मेरे मित्र के बेटे (पोते) को डांट दिया था। पोते ने पुलिस से शिकायत कर दी। पिता जी जेल का आनन्द ले रहे हैं।

जन्म दिन पर विशेष

स्वातंत्र्यवीर सावरकर (28 मई 1883-26 फरवरी, 1966)

विनायक दामोदर सावरकर के जीवनगाथा भारतीय स्वातंत्र्य की संघर्ष गाथा का पर्याय कही जा सकती है। सावरकर का जन्म और शिक्षा दीक्षा पर राष्ट्रभक्त पिता दामोदर और माता राधा बाई का गहरा प्रभाव था। चौदह वर्ष के युवा सावरकर को चाफेकर बन्धुओं के बलिदान से गहरा क्षोभ हुआ। उनका हृदय पुकार उठा ''कार्य अधूरा छोड़ चले हो, इसकी चिन्ता करो नहीं, सबकुछ देकर पूर्ण करूँगा, माना जीवन ध्येय यही''। माँ भगवती के सामने शपथ ली 'मेरे देश की स्वाधीन्ता के लिए मै सशस्त्र युद्ध में शत्रु को मारते हुए चाफेकर की तरह मरूँगा या शिवाजी की तरह विजयी होकर अपनी मातृभूमि के मस्तक पर स्वाराज्य का राज्याभिषेक कराऊँगा।' विद्यार्थी जीवन में उनके विचारों पर लोकमान्य तिलक की गहरी छाप थी। कानून की पढ़ाई करते मुम्बई में उन्होंने 'अभिनव भारत' क्रान्तिकारी संगठन का विस्तार किया।

अंग्रेजों द्वारा भेदभाव की नीति के अन्तर्गत बंगाल विभाजन के फैसले का तीव्र विरोध हुआ। 1905 में तिलक जी की उपस्थिति में पूरे महाराष्ट्र में विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का अभियान चलाया। इंग्लैड जाकर इण्डिया हाऊस में श्याम जी कृष्ण वर्मा के नेतृत्व में सशस्त्र क्रान्ति की मशाल जलाई। क्रान्तिकारी युवकों का प्रशिक्षण, गोला, बारूद की आपूर्ति भारत के लिए सुनिश्चित की।

1857 के संग्राम को अंग्रेजों ने विप्लव और गदर का नाम दिया और वीर नायकों का मजाक उड़ाया। तब वीर सावरकर ने 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम पुस्तक लिखी। यह पुस्तक हालैण्ड से छपकर भारत भेजी गई। योजना कौशल की सफलता ही थी कि लंदन में मदनलाल धींगड़ा ने कर्जन वायली को मार दिया।

गिरफ्तारी - सहयोगी मित्रों का आग्रह मानकर विनायक पेरिस चले तो गए किन्तु वहाँ चेन से नहीं बैठ सके। अपने 'युद्ध क्षेत्र' में लौटने का निर्णय करके वे 13 मार्च, 1910 को पुनः लन्दन पहुँच गये। उनके लौटने की जानकारी ब्रिटिश गुप्तचर पुलिस को लग चुकी थी। अतः जैसे ही ट्रेन विक्टोरिया स्टेशन पर पहुँची उनका डिब्बा घेर लिया गया। स्टेशन पर मोर्चा लगाए सिपाही उनकी ओर लपके व उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार करके उन्हें कुछ दिन ब्रिक्सटन जेल में रखने के बाद मरिया नामक जलयान से बम्बई के लिए भेज दिया गया। जहाज में उन पर सशस्त्र पहरा लगाया गया। जहाज को भारत से पहले कहीं नहीं रोकने की सख्त हिदायत दी गई, क्योंकि अंग्रेजों को भय था कि मार्ग में जहाज रूकने पर उनके क्रान्तिकारी सहयोगी उन्हें छुड़ाने की कोई भी उग्र कार्यवाही कर सकते हैं।

ऐसी स्थिति में भी मुक्त होने की योजना सावरकर जी ने मन ही मन निश्चित कर ली थी। उनका अनुमान था कि जहाज को बीच में कोयला लेने के लिए किसी बंदरगाह पर अवश्य रूकना पड़ेगा तब वे अपनी योजना अमल में लाएँगे।

मुक्ति का साहसिक प्रयास - जब जहाज 'मार्सेल्स' (फ्रांस) बंदरगाह की ओर मोड़ा जाने लगा तब उन्होंने बड़े सहज भाव से निगरानी रख रहे सिपाही से शौचालय में जाने को कहा। शौचालय जाने पर वीर सावरकर ने शौचालय का द्वार अन्दर से बंद किया, ऊपर के कांच पर अपना गाउन उतार कर फैलाया और पोर्ट होल से समुद्र में छलांग लगा दी। कुछ देर बाद स्थिति का भान होने पर जहाज में हड़कम्प मच गया। समुद्र में बंदरगाह की ओर तैरते सावरकर पर अन्धाधुंध गोलियों की बौछार की गई, पर साहस की साक्षात प्रतिमूर्ति सावरकर गोता लगाते और तैरते हुए आगे बढ़ते रहे। अन्ततः वे फ्रांस के क्षेत्र में प्रविष्ठ होने में सफल हुए। बन्दरगाह पर उनके सामने फ्रैंच सन्तरी आया। सावरकर ने उससे बातचीत की, किन्तु अंग्रेजी नहीं जानने के कारण वह उनकी बात समझ नहीं पाया। तक तक गोरे सैनिक वहाँ पहुँच गए और उन्होंने सावरकर जी को गिरफ्त में ले लिया और जहाज पर लाने में सफल हो गए।

दो जन्म का कारावास - इसी बीच भारत में विनायक के विरुद्ध मुकदमे का नाटक शुरू हो गया। देशभक्ति से प्रेरित उनकी क्रान्तिकारी योजनाओं, गतिविधियों तथा उनकी दुर्दम्यता से भयभीत अंग्रेज सरकार ने 23 दिसम्बर, 1910 को वीर विनायक सावरकर को एक ही नहीं दो काले पानी की सजाएँ अलग-अलग मुकदमों में दी। किन्तु वज्र के समान दृढ़ वीरव्रती सावरकर इससे तनिक भी विचलित नहीं हुए। काले पानी की दो जन्मों की सजाओं के संदर्भ में उन्होंने कहा - 'मुझे खुशी है कि ईसाई सरकार ने मुझे दो जन्मों का कारावास देकर पुनर्जन्म के हिन्दू-सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया है।'

27 जून, 1911 को 'महाराजा' जलपोत से उन्हें अन्डमान ले जाया गया और 2 जुलाई को अपना कम्बल और थाली सम्भाले यह निकल पड़ा उस कारावास की ओर जहाँ से नारकीय द्वार में एक बार प्रविष्ठ होने पर वहाँ की पैशाचिक यन्त्रणा झेल कर कोई विरला ही जीवित लौट पाता है। किन्तु राष्ट्रभक्ति के ध्येय की दृढ़ मिट्टी से बना भारत माँ का यह सपूत 11 वर्ष तक कालेपानी का कालकूट पीकर भी 'मृत्युंजयी' बन कर लौटा।

ऐतिहासिक भेंट - 22 जून, 1940 को अचानक नेता जी सुभाष चन्द्र बोस वीर सावरकर से मिलने मुम्बई पहुँचे। दोनों

व्यवहार कुशल

मनुष्य की पहचान उसकी बोलचाल, रहन-सहन और उसके व्यवहार से होती है। मनुष्य अच्छा है या बुरा है, इसके लिए वह कोई सर्टिफिकेट लेकर नहीं घूमता, उसका व्यवहार ही उसके चरित्र का प्रमाण-पत्र है। सच कहूँ तो विश्वविद्यालय की पढ़ाई के लिए सर्टिफिकेट की जरूरत पड़ती है, लेकिन जीवन के विश्वविद्यालय में उसका व्यवहार ही प्रमाण पत्र होता है। इसलिए जो व्यक्ति व्यवहार कुशल होता है, उसके पास जीवन का सबसे बड़ा प्रमाण पत्र होता है और जो व्यक्ति व्यवहार कुशल नहीं है, जिसे कुछ भी पता नहीं हो कि हमें किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए, बड़े-छोटे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए तो वह व्यक्ति मनुष्य दिखता जरूर है, लेकिन वह मनुष्य है ही नहीं। इसलिए जीवन में व्यवहार कुशल होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

व्यवहार कुशल होना एक विज्ञान है, जीवन जीने की विधि है, इसे अभ्यास से सीखा जाता है। उदंड होने में कोई परेशानी नहीं होती। उदंड होना आसान है, सुशील, सज्जन और व्यवहार कुशल होना कठिन है। माँ के गर्भ से न तो कोई व्यवहार कुशल होकर आता है और न ही कोई उदंड होकर। सभी लोग सामान्य स्थिति में ही पैदा होते हैं। जिनके घर का वातावरण सुन्दर होता है, जिनके घरों में बड़े-छोटों का लिहाज किया जाता है, जिनके घरों में अनैतिक कार्य नहीं होते हैं, उनके घरों में बच्चे सुशील, सुन्दर और अनुशासन प्रिय होते हैं।

इसलिए बच्चों का चरित्र निर्माण बहुत कुछ उसके घर का वातावरण और दोस्तों की संगत पर निर्भर करता है। व्यवहार कुशल होना सफल जीवन का एक सुखद मार्ग है। जो व्यक्ति व्यवहार कुशल होता है, वह जीवन में कभी असफल नहीं होता, उसके जीवन में पग-पग पर सफलता मिलती रहती है। वह जहाँ कहीं भी जाता है, अपने व्यवहार से दूसरों को प्रभावित कर लेता है और उससे अपना काम निकाल लेता है। अगर आप किसी को सफल व्यक्ति मानते है तो भी मान लेना चाहिए कि निश्चित रूप से वह व्यक्ति दूसरों की अपेक्षा अधिक व्यवहार कुशल है और जो लोग असफल हैं, उनके संबंध में मान लेना चाहिए कि वह व्यक्ति आचरण और व्यवहार से उदंड है या फिर हीन भावना से ग्रस्त है और इसे अपनी काबलियत पर भरोसा नहीं है। -**आचार्य सुदर्शन**

गर्मी से परेशान एक व्यक्ति ने व्हाट्सएप्प पर संदेश भेजा सूर्यदेव अपनी चमक कुछ कम करो, बहुत तकलीफ हो रही है। सूर्यदेव ने उत्तर दिया सेटिंग में जाओ, वहाँ ऑप्शन है पेड़ लगाओ, उसको बढ़ाओ और सेव पर क्लिक करो। तुरन्त कार्बन डाइऑक्साइड कम हो जाएगा। वातावरण ठंडा हो जाएगा, मौसम साफ होगा और वर्षा होगी। - **राजीव**

सच्ची सोच

मनुष्य जीवन में उच्चता की तरफ बढ़ना तब प्रारम्भ कर देता है जब उसके विचार सुदृढ़ और संकल्प श्रेष्ठ होते हैं। जब उसे यह समझ में आ जाए कि यह सब कुछ प्रकृति का है, अपना कुछ भी नहीं। इसलिए जो कुछ करना है, वह मानवता की सेवा और रक्षा के लिए करना हैं शोषण और सेवा, आसक्ति व विरक्ति स्वार्थ और जनहित दोनों के धरातल पर अपने व्यक्तित्व से अलग हटकर जिस किसी ने भी मानवता के लिए, राष्ट्रहित के लिए अपना अस्तित्व मिटाकर काम किया है वह सदैव महान बना है।

युगों तक ऐसे महान लोगों को पूजा जाता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि न ही वे रुढ़िवादी होते हैं और न ही सांप्रदायिक। वह न धर्मनेता होता है और न ही राजनेता। वह एक ऐसा व्यक्ति होता जो व्यष्टि और समष्टि, दोनों भावों में एक रूप होता है। वह एक रस होता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपकी कोई भी चीज टिकाऊ नहीं है, क्योंकि आप स्वयं टिकाऊ नहीं है। आपका निर्माण ही सम्पूर्ण प्रकृति के अवयवों से हुआ है। जो परमात्मा का दिया हुआ एक अनुदान है। कुछ पल के लिए प्रकृति पुनः उसे अपने में समेटकर विलय करता है, बाकी सभी कुछ अतीत में डूब जाता है।

अपने कर्मों को सुधारकर इसका लेख-जोखा जरुर करें। अपने झूठ अहंकार को कायम रखने के लिए मानवता का गला न घोंटें। इसे ढ़ोकर कहाँ ले जाएंगे? जो मरा दिखता है, वस्तुतः वह मेरा है नहीं। अपनी शक्तियों को जाग्रत कर स्वयं को पहचानने का प्रयास करें। आज का मानव कहीं न कही भटक गया है। जो भीतर से जगा है, जिसने अपने आपको समझ लिया है वह भटक नहीं सकता। जो बाहरी दुनिया को सत्य समझता है, वह जल्दी ही टॅट जाता है। मनुष्य व्यक्ति सेवा कर सकता है। शायद यह देवताओं को भी प्राप्त नहीं। विचारों में परिवर्तन से मनुष्य के व्यक्तित्व में परिवर्तन होने से संस्था और राष्ट्र के नियम एवं प्रणाली में परिवर्तन हो जाता है। इसलिए धार्मिक गुरुओं और राजनेताओं के विचारों का श्रेष्ठ होना नितांत जरूरी है, क्योंकि इनके ऊपर ही राष्ट्र निर्भर करता है। - **संज्ञान**

देशभक्तों में घंटो तक देश की आजादी के बारे में चर्चा हुई। सावरकर की प्रेरणा से सुभाष चन्द्र बोस ने उसी दिन सेना बनाने की शपथ ली।

24 दिसम्बर, 1941 को वीर सावरकर को भागलपुर में हिन्दू महासभा में जाने से रोकने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। उस दिन बकरीद होने के कारण अंग्रेज सरकार ने अधिवेशन पर रोक लगाई थी। अगले वर्ष कानपुर अधिवेशन में वे छठी बार 'महासभा' के अध्यक्ष बनाये गये। उसी अधिवेशन में उन्होंने 'राजनीति का हिन्दूकरण तथा हिन्दू का सैनिकीकरण' का नारा दिया।

26 फरवरी, 1966 को बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक महान् राष्ट्रभक्त अपनी प्रेरक स्मृतियों को छोड़कर विदा हो गया।

-साभार पाथेयकण

महान् भारत के बारे में विदेशी दार्शनिकों के विचारः-

- **मैक्समूलर** - If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth, power, and beauty that nature can bestow – I should point to India.
- **प्रो. हीरेन** – भारत ही वह स्रोत है जिससे न केवल एशिया अपितु समस्त पश्चिमी जगत ने भी अपनी विद्या और धर्म को प्राप्त किया है।
- **मुसलमान लेखक वस्साफ लिखते हैं** – भारत भूमंडल एक अति रमणीय और चित्ताकर्षक देश है। इसकी पावन मिट्टी के कण-कण, वायु की पवित्रता से भी अधिक पवित्र है।
- **मैक्डानल महोदय लिखते हैं** – नाक का ऑपरेशन तथा कृत्रिम अंग बनाना अंग्रेजो ने भारतीयों से अठारहवीं शताब्दी में सीखा था।
- **श्रीमती मेनिंग ने लिखा** – भारतीयों के शल्य चिकित्सा के यंत्र इतने तेज व बारीक होते हैं कि वे बाल को भी लम्बाई में चीर सकते हैं।
- **संसार के सभी विद्वान सहमत हैं** कि गणित विद्या योरोपीय देशों में यूनान से आई। परन्तु यूनान ने यह विद्या कहाँ से सीखीं उत्तर है 'भारत' से। इसीलिए यूनान में गणित ज्ञान को हिन्दसः ज्ञान कहते हैं।

-साभार, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

महापर्व सिंहस्थ 2016

22 अप्रैल से 21 मई, 2016 तक उज्जैन (मध्य भारत पश्चिम) में चलने वाले महापर्व सिंहस्थ में प्रान्त का 100x100 फीट पर सेवा केन्द्र, सूचना केन्द्र, जल संरक्षण का चलित मॉडल, विकलांग सहायता हेतु एम्बुलेंस के साथ-साथ यात्रियों के आवास व्यवस्था का सशुल्क प्रावधान है।

सम्पर्क सूत्र - श्री मुकेश लड्ढ़ा, मो. 9425093658, ईमेल : mukeshladdha@gmail.com

---

हम केवल भाषण और नारेबाजी करते हैं

वीर सावरकर अंडमान जेल से मुक्त होकर नजरबंदी की अवधि पूरी कर चुके थे। उनके अभिनन्दन के लिए आयोजित सभा में कांग्रेस नेता श्री पाटिल तथा के.एफ. नरीमन भी मौजूद थे। उन्होंने सावरकर के तेजस्वी पराक्रम युक्त जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें बीस वर्ष पुराना वहीं क्रान्तिकारी सावरकर चाहिए। श्रोताओं की भारी भीड़ सावरकर को सुनने को उतावली थी कि सावरकर क्या उत्तर देते हैं।

सचमुच सावरकर की सिंहगर्जना से श्रोता चकित रह गये। उन्होंने कहा कि आपको बीस वर्ष पुराना सावरकर चाहिए। मैं हूँ आपका बीस साल पुराना सावरकर। बताओ कौन-कौन इस मार्ग पर बढ़ने के लिए तैयार है। सभा में सन्नाटा छा गया। व्यंग करते हुए उन्होंने कहा ब्रिटिश राजसत्ता ने हम सबका स्वाभिमान और देशभक्ति समाप्त कर दी है। हम सब भाषण और नारेबाजी में विश्वास करने लगे हैं। इसीलिए मेरी चुनौती को स्वीकार करने के लिए कोई तैयार नहीं है। **- डॉ. भुवनेश्वर गुरमेता**

चैतन्य जगत एवं मौसम

संसार में अपने जैसी अर्थात् अपनी प्रजाति की वृद्धि करने में सक्षम प्रजाति को 'चैतन्य' की श्रेणी में रखा जाता है। इस श्रेणी में मानव, पशु, पक्षी के अतिरिक्त समस्त जीवधारी एवं वनस्पति जगत (पेड़, पौधे) सभी आते हैं। पृथ्वी पर जीवन है एवं इसके उत्पादन, वृद्धि, संचालन तथा स्थिति परिवर्तन हेतु प्राकृतिक व्यवस्था है। इस व्यवस्था में हस्तक्षेप के प्रभाव, समस्त जीवित व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

उपरोक्त समस्त अनुकूल एवं प्रभावों का सतत् अध्ययन, विभिन्न परीक्षणों, अनुसंधानों एवं अनुभवों के आधार पर किया जा रहा है। प्रतिकूल प्रभाव के कारण जीव जगत में विभिन्न रोग, विषमताएँ स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होते है। संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन ने भारत को सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव का सामना करने हेतु तैयार रहने की चेतावनी दी है। जनसंख्या वृद्धि एवं फलस्वरूप बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव से पृथ्वीतल का तापक्रम बढ़ रहा है, जिससे ऋतुचक्र में परिवर्तन हो रहे हैं। राष्ट्रीय पर्यावरण एवं स्वास्थ्य केन्द्र (एन.सी.ई.एच.) तथा रोग नियंत्रण एवं बचाव केन्द्र ने 2014 में मौसम परिवर्तन के फलस्वरूप डेंगू एवं चिकन गुनिया जैसी जानलेवा बीमारियों के फैलने की आशंका जताई थी।

मौसम के इस उलटफेर से चैतन्य जगत परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित है-

1. **ताप परिवर्तन का प्रभाव :** पृथ्वी का तापक्रम बढ़ने से पर्वतों पर जिन ग्लेशियरों की लम्बाई लगभग 500 कि.मी. तक थी अब लगभग 70 कि.मी. रह गये हैं। एक दिन 'सदा नीरा' नदियाँ सूख जायेगी। तापवृद्धि के कारण मानव शरीर में नमी कम होने से रक्तचाप की समस्या, हैजा, तेज ज्वर, लू लगना आदि रोग हो सकते हैं।
2. **मौसम परिवर्तन से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव :** मौसम परिवर्तन से प्राय: दैवीय आपदायें आती है जिससे कई बार विशाल जन धन की हानि होती है। बाढ़, भूस्खलन, बर्फवारी, ओला वृष्टि, तूफान, असमय वर्षा, खेतों व जंगलों का बंजर हो जाना आदि मानव की जीवन शैली एवं स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। स्नायु तंत्र, फेफड़ों एवं रक्त संबंधी विकार उत्पन्न होते हैं।
3. **वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव :** वायु प्रदूषण अत्यन्त गंभीर प्रभाव उत्पन्न करता है। इसके कारण रोग के कीटाणु एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँच जाते हैं। वायु प्रदूषण ओजोन सतह को क्षतिग्रस्त करने की क्षमता रखता है। यह सतह सूर्य की पराबैगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है। ये किरणों चर्मरोग, अस्थमा, नमोनिया, एलर्जी तथा असामयिक/आकस्मिक मृत्यु का कारण भी बन जाती है। इन किरणों का शिशुओं के मस्तिष्क एवं स्नायु तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव भी देखा गया है।

सावधानियाँ एवं बचाव के उपाय :-

1. ताप परिवर्तन एवं आर्दता प्रतिशत की बिषमता वाले क्षेत्र चिंहित किए जाएँ।
2. मौसम के प्रतिकूल प्रभाव वाले भौगोलिक क्षेत्रों के आंकड़े एकत्र कर सार्वजनिक किए जाए।
3. कृषि उत्पादन, मुर्गी/मत्स्य पालन तथा खाद्य व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव तथा उनसे निपटने के लिए संभावित व्यवस्थाओं हेतु सटीक कार्यक्रम तैयार किए जाएं।
4. मौसम परिवर्तन के फलस्वरूप ताप परिवर्तन एवं वनस्पति पर प्रभाव एवं बचाव की व्यवस्था की तैयारी हो।
5. ऐसी आपातकालीन परिस्थितियों का पुर्नानुमान एवं निपटने की व्यवस्था जिनके कारण जीवों के विस्थापन एपं पुनर्वास की समस्या उत्पन्न हो सकती है। साधनों में वृद्धि भी अपेक्षित होगी।
6. समुद्र एवं तटीय क्षेत्रों में मौसम परिवर्तन का गहन अध्ययन एवं खतरों की पूर्व चेतावनी की व्यवस्था करना।
7. परम्परागत ईधन एवं प्रदूषण फैलाने वाले अन्य स्रोतों के कम प्रदूषण वाले विकल्प खोजना।
8. प्रभावति लोगों की उपचार, भोजन, पुनर्वास, बचाव एवं जन सुविधाओं की युद्धस्तर पर व्यवस्था करना।
9. भावी पीढ़ी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिकों के मध्य समन्वय स्थापित कर मौसम का पूर्वानुमान, चुनौतियों, समाधानों, प्रतिक्रियाओं की जानकारी प्राप्त करना तथा उन्हें सार्वजनिक कर जन सहयोग प्राप्त करना।

उपरोक्तानुसार कार्यवाही कर प्रतिकूल परिस्थियों से न केवल निपट जा सकता है अपितु जन-धन की हानि भी कम की जा सकती है। 'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत हेतु बड़ा योगदान होगा।

- **ई. बी.डी.शर्मा**, मेरठ

शान्ति की ओर

विश्व में यद्यपि धन का अभाव नहीं है, किन्तु शान्ति का अभाव अवश्य है। धनोपार्जन के लिए इतनी अधिक जनशक्ति को दिग्भ्रमित किया जा रहा है कि सामान्य जनता की रुपये कमाने की क्षमता अधिकाधिक बढ़ गई है, किन्तु दीर्घकालीन परिणाम यह हुआ कि इस अनियंत्रित और अन्यायपूर्ण मुद्रास्फीति से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था बिगड़ गई है और उसने ऐसे सस्ते धनोपार्जन के फल को ही नष्ट करने के लिए बड़े-बड़े भारी लागत से शस्त्रास्त्र बनाने के लिए उकसाया है। धनोपार्जन करने वाले बड़े देशों के नेता लोग वास्तव में शान्ति का अनुभव नहीं कर रहे हैं, बल्कि आणविक अस्त्रों के द्वारा आसन्न विनाश से अपनी सुरक्षा की योजनाँ बना रहे हैं। वस्तुत: इन भयंकर अस्त्रों के परीक्षण के रूप में विपुल धन-राशि समुद्र में फेंकी जा रही है। ऐसे परीक्षण न केवल भारी आर्थिक लागत पर किए जा रहे है, बल्कि अनेक प्राणियों के जीवन को संकट में डाल रहे हैं। इस प्रकार विश्व राष्ट्रकर्मफल के नियमों से बंधते जा रहे हैं। जब लोग इंद्रियतृप्ति की भावना से प्रेरित होते हैं तो जो भी धन कमाया जाता है वह नष्ट हो जाता है, क्योंकि उसका व्यय मानव जाति के संहार के लिए होता है। इस प्रकार मनुष्य के भगवान से विमुख होने के कारण मानवजाति की शक्ति नष्ट हो जाती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि श्री भगवान ही समस्त शक्तियों के स्वामी हैं। धन-सम्पदा की पूजा होती है उसे भाग्य की देवी (लक्ष्मी) कहा जाता है।

कोई मनुष्य भाग्यलक्ष्मी का उपभोग श्रीनारायण की सेवा के बगैर नहीं कर सकता। इसलिए जो व्यक्ति लक्ष्मीजी का गलत उपयोग करना चाहेगा, उसे प्रकृति के नियमों द्वारा दंडित होना पड़ेगा। ये नियम निश्चित करेंगे कि धन-सम्पदा स्वयं शान्ति और संपन्नता लाने के बजाय विनाश का कारण बन जाएगी। इसलिए धन के इस्तेमाल के प्रति हमें अपने विवेक का परिचय देना चाहिए और यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि जो भी धन है उसका मानव कल्याण के लिए सदुपयोग हो। अगर धन का इस्तेमाल के प्रति हमारे मन के भीतर भोग की भावना होगी तो उस धन का अपव्यय ही होगा और हमारा अपना आंतरिक नुकसान भी होगा। धन का सदुपयोग ही हमारे भीतर शान्ति और वास्तविक सुख लाता है। (**श्री प्रभुपाद के प्रवचन का एक अंश**)

अनुकरणीय मालाड पश्चिम

स्वच्छ भारत अभियान में ग्रामीणी क्षेत्रों में शौचालय निर्माण का काम तो शाखाओं के ग्राम विकास के तहत होता है। मुम्बई जैसे नगर में मालवणी धारानी जैसे विशाल झोपड़ पट्टियों में शौचालयों का आभाव प्रदूषण एवं बीमारियों का मुख्य कारण है। प्रधानमंत्री की अपील और सांसद गोपाल सेट्टी की अपील पर भारत विकास परिषद् मालाड शाखा ने श्री एस.एस. गुप्ता, प्रान्तीय अध्यक्ष के सहयोग से 104 शौचालयों का निर्माण कराकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। लोकार्पण में सांसद सेट्टी, श्रीमती विद्या ठाकुर, प्रान्तीय मंत्री, राष्ट्रीय वित्त मंत्री डॉ. ओ. पी. कानूनगो और अनेक दानदाताओं के साथ श्री विनोद शालेकर, डॉ. राम बारोट नगर सेवक उपस्थित रहे। सांसद ने परिषद् की पहल का स्वागत किया। बधाई अध्यक्ष हीरालाल शर्मा।

यात्रा में रखें सावधानी!

यात्रा के दौरान कुछ सावधानियाँ रखने से यात्रा का आनन्द बना रहता है।

कुछ बातें ध्यान रखें :-

1. यात्रा के दौरान सिरदर्द, पेट दर्द तथा पाचन संबंधी दवा साथ रखें।
2. तले, भुने, मसाले खाने का प्रयोग न करें।
3. मांसाहार और फास्टफूड के प्रयोग से बचे।
4. दूध या दही से बने पदार्थों का प्रयोग न करें।
5. भरपेट भोजन न करें।
6. सुपाच्य भोजन करें, मदिरा का सेवन न करें।

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार महाचन्द्र, खुरजा

इन्सान दुनिया में तीन चीज़ें के लिए मेहनत करता है :-

1 मेरा नाम ऊँचा हो

2 मेरा लिबास अच्छा हो

3. मेरा मकान खूबसूरत हो

लेकिन इंसान के मरते ही भगवान उसकी तीनों चीज़े सबसे पहले बदल देता है :-

1. नाम (स्वर्गीय)
2. लिबास (कफ़न)
3. मकान (श्मशान)

सफलता के लि कुछ सूत्र-

कार्यकर्ताओं के लिए

1. आप कुछ नहीं करेंगे....
   तो आपको कोई कुछ नहीं कहेगा....!!
2. आप अगर सक्रिय हैं...
   तो हमेशा आप पर उँगलियाँ उठेगी....!!
3. अगर आप ये नहीं सोचेंगे....
   कि श्रेय किसको मिलेगा....
   तो आप बहुत कुछ कर सकते हैं....!!
4. आपके जितने विरोधी होंगे....
   आपका उतना बड़ा कद होगा....!!
5. आप जितना ज्यादा काम करेंगे....
   उतना ज्यादा और काम करना पड़ेगा....!!
6. जिम्मेदारी उसी की तरफ खिंची आती हैं....
   जो उन्हें उठाना चाहता है....!!
7. आप जो भी प्रोजेक्ट करेंगे....
   उसकी सफलता का श्रेय संस्था को मिलेगा....
   और असफलता की जवाबदेही आपकी होंगी....!!
8. जो आपका सबसे अच्छा हितैषी है....
   वो आपके मुँह पर आपकी आलोचना करेगा....!!
9. आपको प्रशंसा तब मिलेगी....
   जब आप उसकी अपेक्षा करना बंद कर देंगे....!!
10. आप लोकप्रिय तब होंगे....
    जब अपने साथियों के कार्यों को सराहेंगे...
    और उनका उत्साह बढ़ायेंगे....!!
11. आप कब सही थे....
    याद नहीं रखेगा....
    आप कब गलत थे....
    कोई नहीं भूलेगा....!!
12. आप जितना नियम मान कर चलेंगे....
    आप पर उतना ज्यादा नियम मानने का दबाव बनाया जायेगा....!!
    सबसे खास बात....
    सामाजिक कार्यों का उद्देश्य मन की संतुष्टि होता है....
    और इसके लिए बहुत सहना होता है....
    और आत्म संतुष्टि से बढ़कर कुछ नहीं है....!!

अटूट प्रेम

पानी ने दूध से मित्रता की और उसमें समा गया....
जब दूध ने पानी का समर्पण देखा तो उसने कहा-मित्र तुमने अपने स्वरूप का त्याग कर मेरे स्वरूप को धारण किया है... अब मैं भी मित्रता निभाऊँगा और तुम्हें अपने मोल बिकवाऊँगा।
दूध बिकने के बाद जब उसे उबाला जाता है तब पानी कहता है.. अब मेरी बारी है मैं मित्रता निभाऊँगा और तुमसे पहले मैं चला जाऊँगा.... दूध से पहले पानी उड़ता जाता है।
जब दूध मित्र को अलग होते देखता है तो उफन कर गिरता है और आग को बुझाने लगता है।
जब पानी की बूंदे उस पर छींट कर उसे अपने मित्र से मिलाया जाता है तब वह फिर शान्त हो जाता है।
पर इस अगाध प्रेम में ... थोड़ी सी खटास- (निम्बू की दो चार बूंद) डाल दी जाए तो दूध और पानी अलग हो जाते हैं....
थोड़ी सी मन की खटास अटूट प्रेम को भी मिटा सकती है।
रिश्ते में.. खटास मत आने दो।।
'क्या फर्क पड़ता है, हमारे पास कितने लाख, कितने करोड़, कितने घर, कितनी गाड़ियाँ हैं।
खाना तो बस दो ही रोटी है, जीना तो बस एक ही जिन्दगी है
फर्क इस बात से पड़ता है। -**विशाल**

संकल्प- पिता ने उसके मुँह पर सूजन देखी! बेटी क्या हुआ? मुँह तमतमाया हुआ, आँखों में अपमान के आँसू, बोली मुझे एक मुगल ने थप्पड़ मारा है। मैंने उसे मंदिर की मूर्ति पर हुक्के का धुआँ छोड़ने से रोका था। पिता एक धीमी सी 'हूँ' कह कर रूक गये। वे मुगल की दासता में थे। बालिका बड़ी हुई विवाह हुआ। उसने पति से उस घटना का बदला लेने की बात कही। बचपन की बात है, भूल जाओ। वे स्वयं सुलतान की नौकरी में थे। वह माँ बनी। बालक गर्भ में था। दिन रात सोचती कि इस देश में मुसलमानों का अत्याचार कैसे समाप्त किया जाए। बालक बड़ा होने लगा। माँ ने उसे शूरवीरों, महापुरुषों, देवी देवताओं के पराक्रम की कहानियाँ सुनाकर बड़ा किया। वह बालक कलान्तर में हिन्दू समाज की आशा, आकांक्षाओं का कन्द्र बना। उसने हिन्दू साम्राज्य की नीव रखी। ऐसे थे शिवा और उनकी माँ जीवा बाई। - **साभार जान्हवी**।

कुछ सूचनाएँ -

1. प्रान्त तथा शाखाओं के लेटर पैड पर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं संकल्प अंकित किया जाए।
2. सभी लेटर हेड पर शाखा का ई-मेल अंकित किया जाए तथा प्रान्तों को केन्द्रीय कार्यालय से आवंटित ई-मेल, पासवर्ड प्राप्त कर चालू किया जाए तथा अंकित किया जाए।
3. सभी प्रकार के निमंत्रण पत्रों पर मोबाईल तथा ई-मेल अंकित किया जाए।
4. 'नीति' के लिए राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर लेख, लघु कथा, कविताएँ, प्रेरक प्रसंग आदि भेजें।

THE MARRIAGE TOURNAMENT

The ladies and the girls were beautifully dressed. They were conspicuous in the party due to the western style of their dresses. People were busy gossiping and enjoying the different and new varieties of the snacks and the drinks. An aged gentleman, who wore a full sleeves sweater along with a coat and a monkey cap, was continuously staring at the ladies. Another guest in the party came close to that gentleman, and throwing a glance at what that aged gentleman was staring at, asked rather mischievously, 'what are you staring at Singh Sahib…?'

He answered without looking at him – 'It is so cold…. I am standing near the fire point even after wearing so much. I wonder how come these ladies and girls with their sleeveless dresses and very little covering on their back are managing to stand in this lawn…?'

The other gentleman smiled and said – 'Well Singh Sahib….. It is not like that they are not feeling the cold….. Look at them, their shoulders are explaining that they are also feeling the cold, but..……'

'But what….?'

'Singh Sahib look at the quality of their dresses, it must have cost them anything between ten thousand to forty-fifty thousand rupees….. Add to it the value of their ornaments….anything between one lac to five lacs or more…. How do you expect them to conceal all these costly display of their richness and status by putting a coat or a shawl over such costly things on their bodies? After all, attending a marriage or hosting the marriage party is also a kind of tournament now-a-days….. You need to win it by making the guests comment that yours was the best party…or she wore the best dress…. Understand Singh sahib…???'

Mr Singh thought for a while and then nodded in agreement. He looked around the whole lawn, closely observing each and every thing provided for the guests in the marriage party, or the marriage tournament party as it was explained to him just now.

There were married varieties of different cuisines on display for the guests. Rajasthani, Gujarati, Punjabi, Italian, Continental and what not….. The fruit stalls were boasting of imported fruits which were giving an inferiority complex to the Indian fruits because the guests were least interested in them. The sweet stalls could well be treated at par with the food stalls because they had as much distinct varieties to offer as the dinner stalls. 'Chhappan Bhog' i.e. 56 items of sweets were being served.

While he was wondering as to how much it must have cost to the host, a beautiful female voice drew his attention towards the fabulously built up stage in the lawn. It reminded him about the stage he had seen in the TV program during the Film fare awards function. The girl anchor on the stage was very beautiful. She was wearing even lesser pieces of clothes than the female guests in the party.

After watching the completely westernized and cacophonous musical extravaganza for a few minutes, he walked towards another stage where the garlanding or the 'Jayamaal' ceremony was about to take place. It was covered with a giant and approximately hundred feet high black curtain which was now slowly going up. The stage had two extremely beautiful king size chairs for the couple who were gradually descending over it literally from the sky.

The fabulous marriage party was in full swing and the mind of Mr. Singh was also in full swing. He was unable to estimate the budget of such a fabulous extravagant marriage. Although he himself was a reasonably respected member of the society with good enough income, but he was a worried man now. He looked towards his wife and daughters who were watching this spectacular marriage program with awe. He was afraid his wife and daughters will demand similar marriage party whenever it takes place in their life.

Sleep delayed its visit to the eyes of Mr. Singh when he returned home. He was wondering about Mr. Agrawal's attitude towards life. Mr. Agrawal always preached everyone about the simple living and high thinking of the Indian culture. He always despised the western countries about their vulgar displays of wealth in their parties. And if his criticism of the western culture was true, then what about this marriage party of his daughter….? He kept wondering about the hypocrisy of the society and then suddenly recalled a news item. He got up from the bed and searched that particular newspaper and retrieved it from the heap of old newspapers in the shelf.

The heading was….."Lucky draw to select baraatis in Muzaffarnagar." The Panchayat of a town in Muzaffarnagar

had pronounced a diktat that only five persons from the groom's side including their family members, will come for the marriage. And to solve the problem of selection of those five, the groom's father decided to draw the name through lottery. The good part was that people agreed to do so in order to curb this social evil.

Mr. Singh was very happy to read this news but his mind was still worried. The big question before him was how he would convince his people to follow the good path.

After a deep thought through the night, he took a resolve. He will follow what he felt as right and what he felt as the need of the hour. If his family rejects this idea of limited baraatis, he will completely withdraw himself from the process of the marriage.

He got up again from his bed and shouted aloud …. "Only five baraatis…….!!!!" His wife woke up, stared at him and asked with frowning eyes, 'what you were shouting …?' He smiled and replied calmly, 'only five baraatis….or say fifteen baraatis or say twenty baraatis…..enough…!' His wife stared close into his eyes and said, 'you have gone crazy…!'

'All of you might go crazy for a few days when this happens in reality,' saying this Mr. Singh fell down on the bed. His eyes were welcoming the sleep now. His firm resolve on the matter was giving him a peace of mind. He was a tension-free man now.

But the big question remains big…….. 'How will it become a practice of our elite society…how?'

-Nirmal Joshi- Author

आँखों की रोशनी के बिना यूनिवर्सिटी टॉप

दृष्टिहीनता की शिकार राँची की श्वेता मंडल ने बिना ब्रेल लिपि का प्रयोग किये मास्टर कोर्स में टॉप किया। बचपन से दृष्टिहीनता का शिकार श्वेता ने राँची विश्वविद्यालय के दीक्षान्त में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। अरुण कुमार मंडल और डॉ. ओम कुमारी ने श्वेता के लिए पुस्तकों को पढ़कर रिकार्डिंग की और श्वेता रिकार्डिंग सुनकर तैयारी करती थी। – **बधाई।**

भारत विकास परिषद् डायग्नोस्टिक सेन्टर नोएडा

नोएडा जैसी अति उच्चवर्गीय व्यापारिक क्षेत्र में बाजार दर से 25% पर यह सेन्टर गत 4 वर्ष से अपनी सेवायें दे रहा है। ट्रस्ट ने इस क्षेत्र के औद्योगिक मजदूरों तथा निम्न वर्ग के लिए सभी प्रकार के क्लिनीकल टेस्ट 20 रुपये प्रति के दर उपलब्ध करायें हैं प्रतिदिन 80–100 मरीज लाभ ले रहे हैं। वेबथैरेपी के आधार पर 10 बिस्तर के वार्ड में दर्द तथा तनाव की थैरेपी उपलब्ध है। मरीज सुधाकर रंजन और शालिनी ने इसकी गुणवत्ता एवं सस्ती दरों पर संतोष जताया। अध्यक्ष विपिन मल्हन ने बताया कि शीघ्र अल्ट्रासाउण्ड, एक्सरे, कलर डॉप्लर लगाने की योजना प्रगति पर है।

वाह छीपा बड़ौत

राजस्थान दक्षिण पूर्व की शाखा छीपा बड़ौत ने गत 69 महीनों में प्रति मास की 22 तारीख को लगातार नेत्र शिविर का आयोजन कर देश में नेत्र शिविर प्रकल्प में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। अबतक 69 शिविरों में 35051 मरीजों की जांच की गई तथा 11459 मरीजों के नेत्र ऑपरेशन सम्पन्न किये गये। शिविर में महेन्द्र नागर, सुरेश अधलक्खा, नरेन्द्र बाठला सहित पूरी टीम का सहयोग रहा।

नुमाइश

सर्दी की शाम सायं पाँच बजे रीमा सज–धज कर तैयार हो गई। कहाँ जा रही हो रीमा? बड़ी सुन्दर लग रही हो, मैंने पूछा।

आंटी जी, अपने पापा–ममी के साथ नुमाइश जा रही हूँ।

नुमाइश? नुमाइश तो इस समय कहीं नहीं लगी है।

कहाँ लगी है? कभी मंदिर में, कभी बोटानिकल गार्डेन में तथा कभी पायल रेस्टोरेंट में – रीमा ने कहा किन्तु आज मेरी पायल रेस्टोरेंट में नुमाइश है। मेरे बैग में देखिये ना आंटी। तीन प्रकार की मिठाई, काजू, पिस्ता और बादाम लड़के वालों के स्वागत सम्मान के लिए। नुमाइश में पसन्द आ जाऊँगी तो रात में आपको बताऊँगी। रीमा के मुख मण्डल पर व्यंगात्मक मुस्कान व्याप्त हो गई।

– **डॉ. चम्पा श्रीवास्तव**, रायबरेली

मानव धर्म

आधुनिक मानव जीवन में आनन्द की खोज में है, लेकिन वह आनन्द भी क्षणिक होता है। कारण साफ है कि वह ज्योतिर्मय नहीं है।, विवेक है, परन्तु आत्ममय नहीं है। बुद्धिजीवि है, परन्तु बोधितत्व को प्राप्त नहीं। आज मानवता कहाँ जा रही है, किसी को पता नहीं। इस संसर को देखकर स्वयं परमात्मा हँसता होगा, क्योंकि इस सुन्दर संसार और मनुष्य को बनाते समय शायद उसने कभी नहीं सोचा होगा कि मेरी कृति इतनी भयावह हो जाएगी। उसने तो हमारे मूल स्वभाव में प्रेम करुणा, दया और सेवा तैसे सद्‌गुणों का बीज आरोपित किया था, लेकिन हमने अपने आपको कहीं और लाकर खड़ा कर दिया है।

राम, कृष्ण, वशिष्ठ, बुद्ध, महावीर, नानक, शंकराचार्य, मूसा, पैगम्बर ने मानवता का संदेश दिया था। विश्व बन्धुत्व को जगाया था, परन्तु अफसोस आज उन्हीं के कुछ अनुयायियों ने धर्म को सांप्रायिक रूप देकर मानव को मानव से संघर्ष करना सिखा दिया। धर्म भी एक व्यवस्था बन गया है। धर्म संस्थागत नियमों में बंध गया है। धर्म के नाम पर कुछ लोगों ने शोषण प्रारम्भ कर दिया है। इस अवस्था में आज का मानव शान्ति प्रिय होकर जीवन को आनन्दपूर्ण बनाकर कैसे गुजार सकता है? आज समाज के रूढ़िवादी परम्पराओं और भिन्न-भिन्न धर्मो के सांप्रदायिक प्रचारकों के बीच मानवता को संरक्षण दे नाना बड़ा कठिन नजर आ रहा है। मानवता की मानव का धर्म है। इसे आज जानने और समझने की नितांत आवश्यकता है। बहती नदियाँ, लहराता पवन और पेड़-पौधे, ये प्रकृति का संदेश देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। परमात्मा की यह अनुपम कृति मानव के लिए ही तो है। क्या आज का मनव इसे भुलाकर मिटाकर अपना अस्तित्व कायम रख सकता है? कदापि नहीं। हममें हर एक को आज संकल्प लेने की जरूरत है कि मानवता रूपी सागर में मनुष्य रूपी पथिक को प्रेरणा का स्रोत बनकर बहते जाना है। तभी समाज का कल्याण संभव होगा। तभी मानवता का पोष्ण हो सकता है।

हमें अपने आपको सीमित दायरे से बाहर निकलकर एक दूसरे के मनोभाव को समझते हुए सम्मान देना होगां परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य का बोध करना होगां मानव को केवल मानवता के साथ जीवित रहना होगा।

-महायोगी पायलट बाबा

गृहस्थ के चार सूत्र -

1. यह घर हमारा नहीं - भगवान का निवास स्थान है। 2. गृहस्थ का घर प्रभु का मंदिर हो जाए इस प्रकार आचरण करो।
3. गृहस्थ के घर में अतिथि और गरीब का सम्मान हो वह स्वर्ग के समान है। 4. गृहस्थ घर का मालिक नहीं मुनीम है ऐसा समझना चाहिए। - स्वामी शरणानन्दजी महाराज

बड़ी शक्ति है आत्मीयता और आत्म विश्वास में

नेपाल बिहार सीमा पर लगा ढ़ागर टोला भवानीपुर गाँव महादलित बस्ती का छोटा गाँव है। गाँव के चारों तरफ अंग्रेजों ने मजदूरों को रोके रखने के लिए एक नाला खोद दिया था। जिसे गाँव जाना होता कपड़े उतार कर ही जाता था। जन शिक्षा की योजना से गाँव में बच्चों को पढ़ाने और संस्कार देने की योजना बनी। रात में गाँव के लोग इकठ्ठे हुए, टूटी कुर्सी पर बैठे प्रमोद गाँव वालों से चर्चा कर रहे थे। तभी चार पाँच नकाबपोश ने हमें घेर लिया। नक्सलवादी थे वे सब। कुछ खुसफसाहट हुई और एक बुजुर्ग ने खड़े होकर कहा आप अच्छे काम से आये है। अपना काम शुरू कीजिए। हम सब मदद करेंगे। गाँव में संस्कार केन्द्र चल रहा है। कुछ बच्चे निकट के छात्रावास में पढ़ने लगे हैं, नाले पर बांस का पुल बन गया है। अब जब उस गाँव जाता हूँ तो भैय्या बताते है। सर मैं भी उस रात टीम में था। कितनी शक्ति होती है। आत्मीयता और आत्म विश्वास में। - **संकुल संवाद विद्या भारती**

एक अनुकरणीय पहल

युवा छात्र-छात्राओं को अब पूरक अध्ययन के अन्तर्गत देश के वीरों की गाथाओं की जानकारी का मौका मिलेगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने रोचक वार्ता के आधार पर कामिक के रूप में देश के शूरवीर सैनिकों की गौरव गाथाओं को हाई स्कूल की अतिरिक्त पुस्तक के रूप में पढ़ाने की योजना तैयार की है। प्रारंभिक तौर पर पाँच परम वीरचक्र विजेताओं की गौरव गाथा सम्मिलित की जा रही है।

श्रद्धांजलि

1. **आर्य-कानपुर, ब्रह्मावर्त :** शाखा के संस्थापक एवं संरक्षक श्री शिवकुमार आर्य की पत्नी श्रीमती कौशल्या आर्या का 25 जनवरी, 2016 को 65 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया।
2. **क्लेमेन्ट टाउन-देहरादून, उत्तराखण्ड पश्चिम :** शाखा अध्यक्ष श्री रमेश चंद सक्सेना के अनुज श्री नरेश चंद सक्सेना का 24 जनवरी, 2016 को निधन हो गया।
3. **ग्वालियर, मध्य भारत उत्तर :** क्षेत्रीय संरक्षक डॉ. ए. सी. बंसल की माताश्री सन्यासनी श्रीमती माया देवी बंसल का 14 फरवरी, 2016 को निधन हो गया।
4. **भिवाड़ी राजस्थान उत्तर पूर्व :** शाखा के पूर्व अध्यक्षा डॉ. नवनीता शर्मा की पूज्य माताजी का 2 मार्च, 2016 को निधन हो गया।
5. **सांचोर, राजस्थान पश्चिम :** शाखा सदस्य श्री प्रेम प्रकाश सुरतानिया का 37 वर्ष की अल्प आयु में 7 मार्च को निधन हो गया।
6. **बेगूसराय, कोशी बिहार :** शाखा के पूर्व कोषाध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा की माताश्री श्रीमती शैल सिन्हा का 25 फरवरी, 2016 को निधन हो गया।
7. **छपरा, उत्तर बिहार :** शाखा अध्यक्ष श्री श्यामलाल चौधरी का 10 मार्च, 2016 को आकस्मिक निधन हो गया।
8. **सूरज-पंचकुला, हरियाणा उत्तर :** शाखा के संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष वरिष्ठ नागरिक समिति श्री देवकी नन्दन माहेश्वरी का 11 जनवरी, 2016 को निधन हो गया।
9. **Jaitu (Punjab South):** Shri Harbans Lal father of Shri Ramesh Bansal expired on 20/1/2016. Shri Des Raj Goyal father of Shri Satish Goyal State Executive member expired on 22/1/2016
10. **Dr. Kitchlu, Ludhiana (Punjab North):** Respected mother - Mrs. Pushpawati (85 yrs.) and wife – Dr. Mrs. Sarita (55 yrs.) of our member, Dr. R.K.Aggarwal became the victim of murderous attack at their residence on Friday, 29th January 2016.
11. **Ludhiana (Punjab North):** Mrs. Bimla Sharma w/o. of Dr. M.L. Sharma expired.
12. **Mukerian** : Smt. Soma Rani Mother of Shri Narinder Sharma died on 6 Feb., 2016.
13. **Karimganj, Assam** : Smt. Sumitra Bala Roy aged 92 years mother of member Shri Madan Gopal Roy left for heavenly abode on 12th February 2016
14. **Kakinada, Andhra Pradesh** : Branch treasurer Sakala Som Raju passed away in a road accident while crossing the road accident, a rash driver two wheeler made a direct hit resulting into on spot death. . He was serving in a medical camp of BVP. May God keep his soul in peace.

परिषद् परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि

जीवन का महत्व इसलिए है, क्योंकि मृत्यु है, मृत्यु ना हो तो जिन्दगी बोझ बन जायेगी। इसलिए मृत्यु से डरो मत।